आओ कटाई-सिलाई सीखें और सिखाएं

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के पाठ्यक्रम पर आधारित प्रशिक्षण पुस्तक

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

आओ कटाई–सिलाई सीखें और सिखाएं

नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के पाठ्यक्रम पर आधारित कटाई–सिलाई की प्रषिक्षण पुस्तक

(सैद्धांतिक, प्रायोगिक एवं परीक्षा की तैयारी)

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इंदौर 452010 मध्यप्रदेष (भारत)

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान के अन्य प्रकाशन

१. **आओ स्वास्थ्य पढ़ाना सीखें**
ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं के लिए स्वास्थ्य प्रशिक्षण पुस्तिका
मॅकमिलन इंडिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण २००५

२. **आरोग्याची गुरुकिल्ली**
आंगणवाडी सेविकांसाठी आरोग्यविषयक प्रशिक्षण
मॅकमिलन इंडिया लिमिटेड, पहिली आवृत्ति २००६

© बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत २००७
सर्वाधिकार सुरक्षित

पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रूप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ में कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार मात्र लेखक के हैं। लेखक ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री किसी और के प्रकाशन अधिकारों का किसी भी रूप में हनन नहीं करती है। यदि लेखक किसी प्रकाशन सामग्री का संदर्भ ढूंढ़ पाने में असफल रहा हो और इससे किसी के प्रकाशन अधिकारों का उल्लंघन होता है तो इस स्थिति में उचित कदम उठाने हेतु प्रकाशक को लिखित रूप में सूचित करें।

प्रथम संस्करण २००७

मॅकमिलन इंडिया लिमिटेड
भोपाल दिल्ली चेन्नई जयपुर मुंबई पुणे पटना बंगलोर
चंडीगढ़ कोयम्बतूर कटक गुवाहाटी हैदराबाद हुबली लखनऊ
मदुराई नागपुर तिरूवअनंतपुरम विशाखापट्टनम्

ISBN 0230-634052

मॅकमिलन इंडिया लिमिटेड, ७६, मालवीय नगर, टी. टी. नगर, भोपाल ४६२ ००३ के लिए राजीव बेरी द्वारा प्रकाशित

मुद्रण स्थल : अबिन एन्टरप्राइजेस, जी –३१, २४४, ज़ोन १, एम. पी. नगर, भोपाल ४६२ ०११.

आओ कटाई–सिलाई सीखें और सिखाएं

नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के पाठ्यक्रम पर आधारित कटाई–सिलाई की प्रषिक्षण पुस्तक

(सैद्धांतिक, प्रायोगिक एवं परीक्षा की तैयारी)

प्रस्तुतकर्ता

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180, भमोरी
न्यू देवास रोड़
इंदौर 452010
मध्यप्रदेष (भारत)

फोन न. +91 731 2554066
ई मेलः barli@sancharnet.in
http://www.geocities.com/bvirw

प्रकाषनाधिकार © 2007 बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इंदौर, मध्यप्रदेष, भारत

01 अक्टूबर 2007

सर्वाधिकार सुरक्षित
इस कटाई और सिलाई प्रषिक्षण पुस्तक का कोई भी अंष किसी भी रूप में पुनर्मुद्रित या रुपांतर करने से पूर्व प्रकाषनाधिकारी की अनुमति लेना अनिवार्य है।

आभार

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान अपने उन सभी स्टाफ का आभारी है जिन्होंने 'आओ कटाई–सिलाइे सीखें और सिखाएं'' पुस्तक के प्रकाषन में अपनी बहुमूल्य सेवाएं दी हैं। इस पुस्तक की विषय–वस्तु और सिखाने के तरीके के पीछे संस्थान के 23 सालों के सतत् अनुभव पर आधारित है।

सबसे प्रषंसनीय भूमिका कटाई–सिलाई की उन प्रषिक्षिकाओं की है जिन्होंने अपने प्रषिक्षण के दौरान पूरी संवेदनषीलता से नये–नये प्रयोग कर हर दिन एक सत्र के परीक्षण के बाद संषोधन करने में इस पुस्तक का विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह उल्लेखनीय है कि संस्थान में प्रषिक्षिकाएँ वही महिलाएँ रही हैं जो यहां से प्रषिक्षित हुई हैं।

बरली संस्थान की उस टीम को विषेष धन्यवाद जिसने इस पुस्तक की योजना, संरचना, समीक्षा, दिषा निर्देषन, षोध कार्य, मूल्यांकन व संषोधन कर प्रमाणित करने में अपनी उत्कृष्ठ सेवाएं दी हैं।

संस्थान के उन सभी प्रषिक्षणार्थियों का आभार जिन्हें प्रषिक्षित करने के दौरान इस विषय में सीखने, सिखाने के बाद इस पुस्तक की प्रस्तुति हो पाई।

इस रचनात्मक प्रकाषन के विकास में कम्प्यूटर कार्य, फोटोग्राफी, रेखांकन, फोटो स्केनिंग एवं फार्मेटिंग करने वाले स्टाफ व स्वयंसेविकाओं की अत्यन्त सराहनीय सेवाओं के लिए विषेष आभार।

उन लेखकों, षिक्षाविदों, आलोचकों को साधुवाद जिन्होंने महत्त्वपूर्ण सुझाव देकर बहुमूल्य योगदान दिया। कटाई–सिलाई के विषय विषेषज्ञ, अनुभवी टेलर, फैषन डिजाइनर तथा वस्त्र निर्माताओं ने सैद्धांतिक व प्रायोगिक जानकारियाँ प्रमाणित कर पुस्तक के प्रकाषन में सक्रिय भागीदारी निभाई।

धन्यवाद उन सभी कार्यकर्ताओं का जिनके कठिन परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है।

उल्लेखनीय है कि इस कटाई–सिलाई प्रषिक्षण पुस्तक का प्रकाषन कनाडा के रोटरी क्लब ऑफ ग्रैन्ड बेन्ड तथा ब्रिटन परिवार के आर्थिक सहयोग से हुआ है।

विषय–सूची

आभार **1**

विषय–सूची **2–10**

परिचय **11–18**

स्वागत, प्रषिक्षण का परिचय, प्रषिक्षिका/सहयोगी के गुण, सफल टेलर के गुण और कौषल **19–24**

संस्थान मे बने कटाई–सिलाई के नमूने दिखाना **25**

भाग (क)

सैद्धांतिक

पाठ एक : सिलाई मषीन का परिचय **26–51**

सत्र 1: हाथ, पैर और बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मषीन का परिचय 26–29

सत्र 2: फैषन मेकर, कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी) स्ट्रीम लाईट, इंटर लॉक और कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीनों का परिचय 29–31

सत्र 3: सिलाई मषीन के पुर्जे. 31–33

सत्र 4: सिलाई मषीन के आगे के भाग के पुर्जो के उपयोग 33–35

सत्र 5: सिलाई मषीन के मध्य, अंदर, नीचे और हत्थी वाले भाग के पुर्जो के उपयोग 35–40

सत्र 6: सिलाई मषीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातें 41–44

सत्र 7: सिलाई मषीन की साफ–सफाई, तेल देना और मषीन का रखरखाव 45–48

सत्र 8: सिलाई मषीन की खराबियां और ठीक करने के उपाय 48–50

सत्र 9: पाठ का दोहराव 50

सत्र 10: मौखिक परीक्षा 51

पाठ दो : सिलाई में काम आने वाले औजार **52–64**

सत्र 11: नापने और ड्रॉफ्टिंग के औजार 52–56

सत्र 12: कटाई व सिलाई के औजार 56–63

सत्र 13: पाठ का दोहराव 63

सत्र 14: मौखिक परीक्षा 63–64

पाठ तीन : हाथ के टाँके **65–74**

सत्र 15: कच्ची व पक्की सिलाई के टाँके 65–68

सत्र 16: सजावटी टाँके 68–73

सत्र 17: पाठ का दोहराव 73

सत्र 18: मौखिक परीक्षा 73–74

पाठ चार : कटाई और सिलाई में उपयोग होने वाले तकनीकी षब्द 75–81

सत्र 19: तकनीकी षब्द भाग–1 75–78

सत्र 20: तकनीकी षब्द भाग–2 78–80

सत्र 21: पाठ का दोहराव 80

सत्र 22: मौखिक परीक्षा 80–81

पाठ पाँच : नाप लेना 82–92

सत्र 23: नाप लेने का तरीका व ध्यान रखने वाली बातें 82–86

सत्र 24: नाप लेने का क्रम 86–91

सत्र 25: पाठ का दोहराव 91

सत्र 26: मौखिक परीक्षा 91–92

पाठ छह : पेपर पैटर्न और ले–आउट 93–104

सत्र 27: ड्रॉफ्ट 93–95

सत्र 28: पेपर पैटर्न 96–99

सत्र 29: ले–आउट 99–102

सत्र 30: पाठ का दोहराव 102–103

सत्र 31: लिखित परीक्षा 103–104

पाठ सात : कपड़े की सिलाई 105–123

सत्र 32: सीम 105–108

सत्र 33: डार्ट 108–111

सत्र 34: टक्स और प्लीट्स 112–116

सत्र 35: बटन होल और बटन 117–121

सत्र 36: पाठ का दोहराव 122

सत्र 37: लिखित परीक्षा 122–123

पाठ आठ : कटाई–सिलाई 124–141

सत्र 38: पट्टी (फेसिंग) और पाइपिंग (बाइडिंग) 124–130

सत्र 39: योक, मिडरिफ्ट, इलास्टिक, फ्रॉक की बेल्ट और कॉलर 130–135

सत्र 40: जेब और आस्तीन 135–140

सत्र 41: पाठ का दोहराव 140

सत्र 42: लिखित परीक्षा 140–141

पाठ नौ : कपड़े को प्रेस व घड़ी (तह) करना 142–147

सत्र 43: प्रेस करते समय ध्यान रखने वाली बातें 142–144

सत्र 44: कपड़े की घड़ी करके पैक करना 145–146

सत्र 45: पाठ का दोहराव 146

सत्र 46: लिखित परीक्षा 146–147

पाठ दस : कपड़े का चुनाव और रंगों का मिलान 148–153

सत्र 47: कपड़े का चुनाव 148–150

सत्र 48: रंगों का मिलान करना 150–152

सत्र 49: पाठ का दोहराव 152

सत्र 50: लिखित परीक्षा 152–153

पाठ ग्यारह : कपड़े का अनुमान 154–162

सत्र 51: कपड़े का अनुमान लगाना 154–155

सत्र 52: बच्चों व महिलाओं के कपड़ों का अनुमान 155–158

सत्र 53: पुरूषों (जेन्ट्स) के कपड़ों का अनुमान 158–160

सत्र 54: पाठ का दोहराव 160–161

सत्र 55: लिखित परीक्षा 161–162

पाठ बारह : परिधान (ड्रेस) डिजाइनिंग व कपड़े की फिटिंग 163–174

सत्र 56: ड्रेस डिजाइनिंग 163–169

सत्र 57: ड्रेस डिजाइनिंग की धारणा 169–171

सत्र 58: कपड़े की फिटिंग 171–172

सत्र 59: पाठ का दोहराव 173

सत्र 60: लिखित परीक्षा 173–174

पाठ तेरह : बॉडिस ब्लॉक बदलाव (संषोधन) एवं तालमेल (सामंजस्य) 175–182

सत्र 61: बॉडिस ब्लॉक 175–176

सत्र 62: बदलाव (संषोधन) एवं तालमेल (सामंजस्य) 176–180

सत्र 63: पाठ का दोहराव 180–181

सत्र 64: लिखित परीक्षा 181–182

पाठ चौदह : स्वयं सहायता समूह विकास की कुंजी 183–188

सत्र 65: विकास की कुंजी 183–188

भाग (ख)

प्रायोगिक

पाठ एक : हाथ के बुनियादी टाँके और सजावटी सामान 189–202

सत्र 1: समान कच्चा व टेढ़ा कच्चा टाँका बनाना 189–190

सत्र 2: लूप व परसूज टाँका बनाना 109–191

सत्र 3: रजाई व बखिया टाँका बनाना 191–192

सत्र 4: चाम्पे व तुरपाई का टाँका बनाना 192

सत्र 5: कम्बल व जाली टाँका बनाना 192–193

सत्र 6: मछली व परों का टाँका बनाना 193–194

सत्र 7: डंडी व सांकल टाँका बनाना 194

सत्र 8: पोला व भरवा टाँका बनाना 194–195

सत्र 9: क्रॉस व आइलैट टाँका बनाना 195

सत्र 10: मकड़ी व गठान टाँका बनाना 195–196

सत्र 11: स्मॉकिंग टाँका बनाना 196–197

सत्र 12: गोटा, बटन व लेस टाँकना 197–198

सत्र 13: मोती, काँच व टिच बटन टाँकना 198–199

सत्र 14: कंगूरे, आई, काज बनाना व हुक टाँकना 199–200

सत्र 15: झालर, इलॉस्टिक व चेन को कपड़े पर लगाना 200–201

सत्र 16: पाठ का दोहराव 201

सत्र 17: मौखिक परीक्षा 202

पाठ दो : मशीन से कपड़े की सिलाई 203–214

सत्र 18: सादी व कटावदार सिलाई करवाना 203–204

सत्र 19: ऊपरी व चपटी सिलाई करवाना 204–205

सत्र 20: गुम व टेकिंग प्लेन सिलाई करवाना 205–206

सत्र 21: प्रेस ओपन व सेल्फ बाउंड सिलाई करवाना 206–207

सत्र 22: एक नोक वाली डार्ट बनवाना 207

सत्र 23: दो नोक वाली डार्ट बनवाना 207–208

सत्र 24: पिन और चौकोर टक्स बनवाना 208–209

सत्र 25: क्रॉस और डोरी वाले टक्स बनवाना 209

सत्र 26: पैल और ग्रेजुएटिड टक्स बनवाना 210
सत्र 27: सीधी और बाक्स प्लीट बनवाना 210–211
सत्र 28: इनवर्टिड और मीट प्लीट बनवाना 211–212
सत्र 29: नाईफ और झूठी प्लीट बनवाना 212–213
सत्र 30: फेसिंग पट्टी और पाइपिंग बनवाना 213
सत्र 31: पाठ का दोहराव 213–214
सत्र 32: मौखिक परीक्षा 214

पाठ तीन : कटाई–सिलाई की तैयारी 215–222

सत्र 33: कपड़े की सिलाई करते समय ध्यान रखने वाली बातें 215–221
सत्र 34: पाठ का दोहराव 221
सत्र 35: मौखिक परीक्षा 222

पाठ चार : घेर वाला (सादा) पेटीकोट 223–231

सत्र 36: नाप लेना 223–224
सत्र 37: ड्रॉफ्ट बनाना 224–226
सत्र 38: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 226–227
सत्र 39: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 227–228
सत्र 40: कच्ची व पक्की सिलाई करना 228–229
सत्र 41: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 229–230
सत्र 42: पाठ का दोहराव 230–231
सत्र 43: मौखिक परीक्षा 231

पाठ पाँच : छह कली का पेटीकोट 232–241

सत्र 44: नाप लेना 232–233
सत्र 45: ड्रॉफ्ट बनाना 233–236
सत्र 46: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 236
सत्र 47: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 237–238
सत्र 48: कच्ची व पक्की सिलाई करना 238
सत्र 49: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 239
सत्र 50: पाठ का दोहराव 239–240
सत्र 51: मौखिक परीक्षा 240–241

पाठ छह : झबला 242–253

सत्र 52: नाप लेना 242–243

सत्र 53: ड्रॉफ्ट बनाना 243–248

सत्र 54: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 248–249

सत्र 55: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 249–250

सत्र 56: कच्ची व पक्की सिलाई करना 250–251

सत्र 57: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 251–252

सत्र 58: पाठ का दोहराव 252

सत्र 59: मौखिक परीक्षा 253

पाठ सात : सादी फ्रॉक 254–264

सत्र 60: नाप लेना 254–255

सत्र 61: ड्रॉफ्ट बनाना 255–259

सत्र 62: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 260

सत्र 63: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 260–261

सत्र 64: कच्ची व पक्की सिलाई करना 261–262

सत्र 65: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 262–263

सत्र 66: पाठ का दोहराव 263–264

सत्र 67: मौखिक परीक्षा 264

पाठ आठ : चड्डी 265–272

सत्र 68: नाप लेना 265–266

सत्र 69: ड्रॉफ्ट बनाना 266–268

सत्र 70: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 268–269

सत्र 71: ले–आउट व कपड़े कटिंग करना 269–270

सत्र 72: कच्ची व पक्की सिलाई करना 270

सत्र 73: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 270–271

सत्र 74: पाठ का दोहराव 271–272

सत्र 75: मौखिक परीक्षा 272

पाठ नौ : टुक्की (कटोरी) वाला ब्लाऊज 273–285

सत्र 76: नाप लेना 273–274

सत्र 77: ड्रॉफ्ट बनाना 274–280
सत्र 78: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 280–281
सत्र 79: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 281–282
सत्र 80: कच्ची व पक्की सिलाई करना 282–283
सत्र 81: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 283–284
सत्र 82: पाठ का दोहराव 284–285
सत्र 83: मौखिक परीक्षा 285

पाठ दस : सादा ब्लाऊज 286–297

सत्र 84: नाप लेना 286–287
सत्र 85: ड्रॉफ्ट बनाना 287–292
सत्र 86: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 292–293
सत्र 87: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 294
सत्र 88: कच्ची व पक्की सिलाई करना 294–295
सत्र 89: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 295–296
सत्र 90: पाठ का दोहराव 297
सत्र 91: मौखिक परीक्षा 297

पाठ ग्यारह : कुरती 298–308

सत्र 92: नाप लेना 298–298
सत्र 93: ड्रॉफ्ट बनाना 300–304
सत्र 94: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 304–305
सत्र 95: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 305–306
सत्र 96: कच्ची व पक्की सिलाई करना 306
सत्र 97: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 307
सत्र 98: पाठ का दोहराव 307–308
सत्र 99: मौखिक परीक्षा 308

पाठ बारह : सलवार 309–317

सत्र 100: नाप लेना 309–310
सत्र 101: ड्रॉफ्ट बनाना 310–313
सत्र 102: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 313

सत्र 103: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 314
सत्र 104: कच्ची व पक्की सिलाई करना 315
सत्र 105: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 315–316
सत्र 106: पाठ का दोहराव 316
सत्र 107: मौखिक परीक्षा 317

पाठ तेरह : चूड़ीदार पाजामा 318–326

सत्र 108: नाप लेना 318–319
सत्र 109: ड्रॉफ्ट बनाना 319–322
सत्र 110: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 322–323
सत्र 111: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 323
सत्र 112: कच्ची व पक्की सिलाई करना 324
सत्र 113: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 324–325
सत्र 114: पाठ का दोहराव 325
सत्र 115: मौखिक परीक्षा 326

पाठ चौदह : जेन्ट्स षर्ट 327–339

सत्र 116: नाप लेना 327–328
सत्र 117: ड्रॉफ्ट बनाना 328–333
सत्र 118: पेपर पर ड्रॉफ्ट और पेपर पैटर्न बनाना 334
सत्र 119: ले–आउट व कपड़े की कटिंग करना 334–336
सत्र 120: कच्ची व पक्की सिलाई करना 336–337
सत्र 121: फिनिषिंग, प्रेस व घड़ी करना 337–338
सत्र 122: पाठ का दोहराव 338
सत्र 123: मौखिक परीक्षा 339

भाग (ग)

परीक्षा की तैयारी

सत्र 1: समूह बनाना 340–341
सत्र 2: पाठ एक का दोहराव 341–344
सत्र 3: पाठ एक की परीक्षा 344–346
सत्र 4: पाठ दो का दोहराव 346–349

सत्र 5: पाठ दो की परीक्षा 349
सत्र 6: पाठ एक से दो का दोहराव 349–351
सत्र 7: पाठ एक से दो की परीक्षा 352
सत्र 8: पाठ एक से तीन का दोहराव 352–354
सत्र 9: पाठ एक से तीन की परीक्षा 354
सत्र 10: पाठ एक से चार का दोहराव 354–355
सत्र 11: पाठ एक से चार की परीक्षा 355
सत्र 12: पाठ एक से पाँच का दोहराव 356–357
सत्र 13: पाठ एक से पाँच की परीक्षा 357
सत्र 14: पाठ एक से छह का दोहराव 358
सत्र 15: पाठ एक से छह की परीक्षा 358–359
सत्र 16: पाठ एक से सात का दोहराव 359–361
सत्र 17: पाठ एक से सात की परीक्षा 361
सत्र 18: पाठ एक से आठ का दोहराव 361–362
सत्र 19: एक से आठ पाठ की परीक्षा 362
सत्र 20: पाठ एक से नौ का दोहराव 362–363
सत्र 21: पाठ एक से नौ की परीक्षा 364
सत्र 22: पाठ एक से दस का दोहराव 364–365
सत्र 23: पाठ एक से दस की परीक्षा 365
सत्र 24: पाठ एक से ग्यारह का दोहराव 365–367
सत्र 25: पाठ एक से ग्यारह का परीक्षा 367
सत्र 26: पाठ एक से बारह का दोहराव 367–368
सत्र 27: पाठ एक से बारह की परीक्षा 368
सत्र 28: पाठ एक से तेरह का दोहराव 369
सत्र 29: पाठ एक से तेरह की परीक्षा 370
सत्र 30: राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान का पेपर हल करना 370–373
सत्र 31: राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान का पेपर की परीक्षा 373–374
सत्र 32: राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान का प्रष्नों का तरीका 374–385
चित्र और संदर्भ की सूची 386

****

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान : एक परिचय

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की स्थापना राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभा, नई दिल्ली द्वारा बहाई ग्रामीण महिला व्यावसायिक प्रषिक्षण संस्थान के नाम से 1985 में इन्दौर में की गई। 2001 से मध्यप्रदेष सोसायटी अधिनियम के तहत **''बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान''** के नाम से स्वषासी स्वयंसेवी संस्था बनी। 'बरली' षब्द का अर्थ है घर के ठीक बीच, वह आधार स्तम्भ (लकड़ी का खम्बा) जिस पर पूरा घर टिका रहता है। झाबुआ, धार के आदिवासी समुदायों में ''बरली'' लड़कियों का जाना पहचाना नाम है। इस नाम को देने के पीछे यह अवधारणा है कि महिला ही समाज की 'बरली' है जिन पर पूरा समाज टिका हुआ है। महिला सषक्त होगी तो ही समाज सषक्त होगा।

संस्थान का उद्देष्य

संस्थान का मुख्य उद्देष्य है ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं को प्रषिक्षित कर उनकी क्षमताओं और योग्यताओं को उजागर करना है, जिससे वे अपना, अपने परिवार, अपने गाँव, अपने समुदाय और अपने देष का विकास कर सकें। अपने आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में आगे बढ़ें व सषक्त बन सकें। अपने अधिकारों को पहचान सकें और उनमें अषिक्षा, गरीबी व अंधविष्वास व बीमारी कम हो सके। संस्थान ने इस बात को जरूरी समझा कि महिलाओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना बहुत जरूरी है। ताकि उन्हें प्रषिक्षित कर अपने परिवार व समुदाय में रहने वाली गर्भवती महिलाओं, बच्चों व दूध पिलाने वाली माताओं की देखभाल ऐसे कर पाए कि माता की मृत्यु दर कम हो सके। यानी मरने वाली महिलाओं व छोटे बच्चों की संख्या कम हो सके। संस्थान में प्रषिक्षण लेने आई बहनों का व्यक्तित्व विकास करना भी एक महत्त्वपूर्ण उद्देष्य है। जिससे उनका आत्मविष्वास बढ़ सके, वे अपने पैरों पर खड़े हो सके। व्यक्तित्व विकास व व्यावसायिक प्रषिक्षण से उन्हें अपना सामाजिक व आर्थिक विकास करने में मदद मिलती है। इससे बहनें अपने अन्दर मानवीय संस्कारों व नैतिक नेतृत्व के गुण विकसित कर अपने गाँव जाकर विकास के लिए काम कर सकती हैं।

प्रषिक्षण कार्यक्रम

बरली संस्थान ने पिछले 23 वर्षों में मध्यप्रदेष के धार, झाबुआ, देवास, खरगोन, हरदा खंडवा, भोपाल के अतिरिक्त छत्तीसगढ़, बिहार, उड़ीसा, आंध्रप्रदेष, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेष व मणिपुर के ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों से 450 गाँवों से 4000 महिलाएं प्रषिक्षण ले चुकी हैं। प्रषिक्षणार्थियों की उम्र 15 से 35 वर्ष के बीच की होती है।

प्रषिक्षण की प्राथमिकता ज्यादातर आदिवासी, अनुसूचित जाति, विकलांग, विधवा, परित्यक्त, समाज द्वारा उपेक्षित, आर्थिक रूप से पीड़ित महिलाओं को दी जाती है। ज्यादातर निरक्षर और कुछ वो जो स्कूल की पढ़ाई बीच में छोड़ चुकी होती हैं यह प्रषिक्षण दो प्रकार के हैं:

1. आवासीय प्रषिक्षण

2. गैर आवासीय प्रषिक्षण

आवासीय प्रषिक्षण

आवासीय प्रषिक्षण संस्थान परिसर इन्दौर में दिए जाते हैं। यह प्रषिक्षण निःषुल्क हैं।

1. सामुदायिक स्वयं सेविका – यह प्रषिक्षण कार्यक्रम 6 महीने का होता है। यह ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं की जरूरत के अनुसार बनाया गया है। इस प्रषिक्षण में प्रषिक्षणार्थियों को साक्षरता, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, बागवानी व पर्यावरण के साथ व्यावसायिक प्रषिक्षण जैसे कटिंग और टेलरिंग, बुनाई, ब्लॉक प्रिंटिंग, कढ़ाई, हिन्दी टाइपिंग और कम्प्यूटर का प्रषिक्षण दिया जाता है। प्रषिक्षणार्थी बहनें नेषनल ओपन स्कूल से सिलाई व कटाई की परीक्षा में बैठती हैं जहां से पास होने पर उन्हें नेषनल ओपन स्कूल का प्रमाण पत्र भी दिया जाता है। इस प्रषिक्षण का उद्देष्य अपना जीवन, परिवार के सदस्यों के जीवन व अपने समुदाय को विकसित करना है। इस प्रषिक्षण को लेने के बाद प्रषिक्षणार्थी बहनें अपने–अपने गाँवों में जाकर अपने आसपास के लोगों को स्वास्थ्य षिक्षा, नैतिक षिक्षा, बच्चों को अच्छी षिक्षा देना, जो भी बनता है सिखाती हैं।

2. सामुदायिक प्रषिक्षिका प्रषिक्षण – यह प्रषिक्षण कार्यक्रम एक वर्ष का होता है। इसमें प्रषिक्षणार्थी आठवीं पास या इससे ज्यादा पढ़ी–लिखी होती हैं। पहले छह महीने में वे सामुदायिक स्वयं सेविका प्रषिक्षण लेती हैं। दूसरे छह महीने में वह प्रषिक्षण देती हैं। इस पुस्तक में इन प्रषिक्षणार्थियों को **सहयोगी** षब्द उपयोग किया गया है। ये **सहयोगी** ही आगे चलकर प्रषिक्षण देने योग्य हो जाते हैं। इन छह महीनों में साक्षरता, निरीक्षण, संचार, सभा आयोजन, परामर्ष, बच्चों की कक्षाओं का संचालन, महिला–पुरूष समानता, महिला के अधिकार, व्यक्तित्व विकास, टाइपिंग व कम्प्यूटर पर कार्य करना सीखती हैं। जो दसवीं पास होती हैं वे हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग की राष्ट्रीय मुक्त

विद्यालयी षिक्षा संस्थान की परीक्षा देती हैं।

गैर आवासीय प्रषिक्षण

बरली ग्रामीण विस्तार केन्द्र सन 2004 में संस्थान के तीन विस्तार केन्द्रों की षुरूआत हुई। जिनमें यहाँ से प्रषिक्षित प्रषिक्षणार्थियों ने काम करना षुरू किया। आज वे सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में सक्रिय हैं। इनका संचालन छत्तीसगढ़ के बेवरती, मोहपुर व कांकेर में किया जा रहा हैं। यह विस्तार केन्द्र उन महिलाओं के लिए हैं जो घर छोड़कर संस्थान आकर प्रषिक्षण ले पाने में असमर्थ हैं। यह प्रषिक्षण कार्यक्रम तीन माह का होता है। इन तीन माह में मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास, स्वास्थ्य षिक्षा व कटाई–सिलाई आदि का प्रषिक्षण दिया जाता है। हर रोज पाँच घंटे का प्रषिक्षण होता है। इस प्रषिक्षण के बाद उन्हें संस्थान से प्रमाणपत्र दिया जाता है। प्रषिक्षण में षामिल महिलाओं को प्रषिक्षण में प्राप्त ज्ञान को अपने सहेली, पड़ोस व परिवार के साथ बांटने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि उनका परिवार व समुदाय उनके प्रषिक्षण का लाभ ले सकें। उन्हें यह समझाया जाता है कि अगर वे प्रषिक्षण से स्वयं को सषक्त कर लेगी तो वे अपने परिवार को सषक्त करने और समाज के सषक्तिकरण में अपना योगदान दे सकती हैं।

संस्थान के अन्य प्रषिक्षण कार्यक्रम

माता–पिता की बैठक– सामुदायिक स्वयं सेविका प्रषिक्षण में आई प्रषिक्षणार्थियों के माता–पिता के लिए संस्थान में बैठक आयोजित की जाती है। इस बैठक से वे यह जानते है कि उनकी बेटी प्रषिक्षण में क्या सीखती है? कैसे सीखती है? उन्हें सिखाने वाले लोग कौन है? उनके सिखाने का तरीका क्या हैं? वह कहां रहती है? क्या खाती हैं आदि। जिससे समुदाय के अन्य लोगों को संस्थान के बारे में जानकारी मिलती है। यही माता–पिता जब वापस गाँव जाते हैं तथा दूसरों को संस्थान के प्रषिक्षण के बारे में बताते हैं तो दूसरे लोग भी अपनी बहू –बेटी को संस्थान में प्रषिक्षण के लिए भेज पाते हैं।

सौर ऊर्जा का उपयोग पर प्रषिक्षण– संस्थान में प्रषिक्षण लेने आई सभी प्रषिक्षणार्थियों को सौर ऊर्जा का उपयोग कर खाना बनाने का प्रषिक्षण दिया जाता है। इस प्रषिक्षण हेतु संस्थान में एक बड़े सोलर किचन में तीन बड़े, एक मध्यम आकार का और 6 छोटे कुकर लगाए गए हैं। जिससे हर महीने में 900 किलो लकड़ी व 90 गैस सिलेण्डरों की बचत होती है। प्रषिक्षण के बाद अगर कोई प्रषिक्षणार्थी अपने घर सोलर कुकर ले जाना चाहती है तब संस्थान उस महिला को 10 दिन का प्रषिक्षण देता है। जिसमें सोलर कुकर को असेम्बल करना, उसका रखरखाव तथा उसका उपयोग करना सिखाया जाता है। इसके अलावा सोलर कुकर द्वारा कपड़ों पर प्रेस करना, रंगाई–छपाई के लिए काम में आने वाली मोम को गर्म करना, सोलर हीटर से पानी गर्म करना एवं सोलर ड्रायर से सब्जियाँ सुखाना आदि का प्रषिक्षण दिया जाता है और उपयोग करना सिखाया जाता है।

स्वयं सहायता समूह का प्रषिक्षण– संस्थान में स्वयं सहायता समूहों के पदाधिकारियों को प्रषिक्षण दिया जाता हैं। इसमें सोलर कुकर का उपयोग खाद्य पदार्थ बनाने के लिए करना व सोयाबीन का उपयोग कर अलग–अलग तरह के खाने का सामान जैसे मिठाई, नमकीन पदार्थ बनाना और बेचना आदि। समूह के सफल संचालन पर विषेष ध्यान दिया जाता है।

पाठ्यक्रम

संस्थान में नीचे लिखे विषयों पर पाठ्यक्रम विकसित किए गए हैं।

साक्षरता – साक्षरता के बिना सषक्तिकरण संभव नहीं है। इसलिए संस्थान में साक्षरता के अंतर्गत पढ़ना–लिखना सिखाया जाता है। प्रषिक्षण की षुरूआत में ज्यादातर प्रषिक्षणार्थी निरक्षर या अर्द्धसाक्षर होते हैं। छह माह के प्रषिक्षण में वे पुस्तक पढ़ना, पत्र, संदेष, सूचना, चिन्ह तथा सरल गणित, वजन, भार, नाप व समय सीखती हैं।

स्वास्थ्य षिक्षा – स्वास्थ्य पुस्तक में स्वस्थ पारंपरिक रीतिरिवाजों को बढ़ावा दिया है। गलत और नुकसानदायक मान्यताओं को कम करने की कोषिष की है। प्रषिक्षणार्थी स्वयं की, घर की तथा समुदाय के साफ–सफाई के बारे में सीखती है। सामान्य बीमारियां और रोकथाम, पोषण, पीने का पानी, स्वस्थ जीवन के बारे में ज्ञान पाती हैं। गर्भवती महिला की देखभाल, सुरक्षित प्रसव, प्रसव बाद महिला की देखभाल, बच्चों का टीकाकरण, बच्चों के जन्म में अंतर, बच्चों का पालन–पोषण, किषोरावस्था, लिंग जागरूकता, जन्म–मृत्यु का पंजीकरण आदि विषयों को सीखती हैं।

मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास – इस प्रषिक्षण में अपना और अपने समुदाय का विकास, समाज में योगदान देने के लिए महिला को ज्ञान, अनुभव, क्षमता तथा आत्मविष्वास व आत्मसम्मान का विकास करना जरूरी है। इस प्रषिक्षण में प्रषिक्षणार्थी सभी मानवीय मूल्य व संस्कारवान बनना सीखती हैं। आत्मविष्वास, योग्यता, परामर्ष से निर्णय लेना, पहल करना, नेतृत्व करना, स्त्री–पुरूष समानता, महिलाओं के अधिकार व कानून आदि विकास के लिए गतिविधियाँ करवाई जाती हैं।

पर्यावरण संरक्षण – ज्यादातर महिलाएं ऐसे परिवारों से होती हैं जिनके घर में खेती का कार्य होता है। इस प्रषिक्षण के माध्यम से प्रषिक्षणार्थियों से खेती करने के नए–नए आसान तरीके सिखाए जाते हैं : जैसे सब्जी लगाना, पानी का सही उपयोग, केंचुए से खाद बनाना, सौर ऊर्जा का उपयोग, सोलर कुकर से खाना बनाना, कचरे का निपटारा आदि पर प्रषिक्षण दिया जाता है। यहाँ पर रद्दी पेपर व खेत के बारीक कचरे और सूखे पत्ते से धुँआरहित कंडों का निर्माण किया जाता है। निर्मल ग्राम योजना के अंतर्गत संस्थान में महिलाओं ने राजमिस्त्री का प्रषिक्षण लिया और वे अब अपने गाँवों में षौचालय बना रही हैं।

व्यावसायिक कौषल – इस प्रषिक्षण में कटाई–सिलाई, कढ़ाई, कपड़े की रंगाई, छपाई, टाइपिंग, कम्प्यूटर पर हिन्दी/अंग्रेजी की टाइपिंग सीखना और सोलर कुकर का उपयोग करना सिखाया जाता है। कटाई–सिलाई में सभी बहनें ज्यादा उत्सुक होती हैं यह विषय संस्थान का प्रमुख आकर्षण भी है। हिन्दी व अंग्रेजी टाइपिंग में जो प्रषिक्षणार्थी 10वीं पास होती हैं वे टाइपिंग व कम्प्यूटर सीखकर परीक्षा देकर प्रमाण पत्र हासिल करती हैं। कपड़े की रंगाई, छपाई में बहनें कपड़े रंगना, डिजाइन बनाना सीखती हैं और अपनी कला कौषल का विकास करती हैं।

बरली संस्थान में कटाई–सिलाई पाठ्यक्रम, प्रषिक्षण का मुख्य अंग रहा है। इस प्रषिक्षण से ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता मिलती है। जिससे वे अपने परिवार और समुदाय का विकास कर सकती है। जब महिला अपनी आय को बढ़ाती है तो उसके आय का ज्यादातर भाग का फायदा उस परिवार को ही होता है। जिसका प्रभाव उसके स्वयं, परिवार व पूरे समाज पर पड़ता है। संस्थान में अभी तक जिन महिलाओं ने प्रषिक्षण लिया है। उनमें से ज्यादातर महिलाएं कटाई–सिलाई का काम करती हैं। इनमें से कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनके लिए प्रषिक्षण ही सहारा बन गया है।

झाबुआ जिले की ओझड़ गाँव की घीचली सस्तिया जिसकी षादी उमराली में हुई थी। उसने संस्थान से प्रषिक्षण लिया अपने पति को भी सिलाई करना सिखाया। अचानक उसके पति ज्यादा बीमार हो गए और इसी बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई। इसके बाद घीचली को उसके ससुराल वालों ने घर से निकाल दिया। उसके पास एक पुरानी सिलाई मषीन थी जिस पर उसने सिलाई का काम षुरू और उसकी आय से अपने बच्चों का पालन कर रही है व गृहस्थी चला रही है। आज वह अकेले होते हुए भी असहाय या किसी पर निर्भर नहीं है। लोगों को वह कहती है कि ''मेरा पति चला गया, ससुराल वालों ने निकाल दिया लेकिन मेरी कटाई–सिलाई का प्रषिक्षण मेरे साथ है।''

साक्षरता से सिलाई तक

संस्थान में प्रथम तीन माह का साक्षरता का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। जिसमें कटाई–सिलाई से संबंधित षब्दों को षामिल किया गया है। इससे उन्हें उन तकनीकी व सिलाई से संबंधित जानकारी को याद रखने में सुविधा होती है। सिलाई पाठ्यक्रम महिलाओं में साक्षरता के प्रति रुचि को और बढ़ाता है जो हर इंसान के विकास के लिए जरूरी है। नीचे लिखा वाक्य महिलाओं के विकास में षिक्षा के महत्व को स्पष्ट करता है ..... उन्हें हर तरह से लड़कियों के प्रषिक्षण में संलग्न हो जाना चाहिए, उन्हें ज्ञान की षिक्षा देना, सद्व्यवहार, सही जीवन यापन, सुन्दर चरित्र निर्माण, षुद्धता, एकनिष्ठा, अर्ध व्यवसाय, दृढ़ता, घर की व्यवस्था, बच्चों की षिक्षा और लड़कियों को आवष्यकतानुसार जो भी जरूरी हो, वह सब कुछ महिला को देना है।

संस्थान में प्रषिक्षण देने का तरीका

परिचय

कटाई–सिलाई पाठ्यक्रम का हर सत्र और प्रषिक्षण का तरीका संस्थान में लगातार प्रयोग, परीक्षण और संषोधन करते हुए विकसित किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया में प्रषिक्षणार्थियों की समझ, उनकी संस्कृति और आवष्यकताओं का खासतौर से ध्यान रखा गया है। प्रयास किया गया है कि यह पाठ्यक्रम सिर्फ ज्ञान का ही नहीं बल्कि प्रेरणा स्रोत बने। इससे नैतिक मूल्यों का विकास होता है और अंतर्मन की षक्ति एवं ऊर्जा को नई दिषा मिलती है। न्यायप्रिय और विकासषील बने रहने के लिए व्यक्ति विषेष व सामाजिक संस्थानों में मौलिक क्षमता को बढ़ाना आवष्यक है।

प्रषिक्षण के दौरान जो पढ़ाया और सिखाया जाता है, उसे संस्थान में रहकर व्यवहार में भी लाया जाता है। ज्यादातर पाठों में प्रष्न और उत्तर, नमूने, चर्चा और व्यावहारिक उदाहरण दिए गए हैं जिससे कठिन विषयों को भी आसानी से समझा जा सके।

चूंकि अधिकतर महिलाएं निरक्षर, नवसाक्षर या स्कूल छोड़ चुकी होती हैं, इसलिए इस प्रषिक्षण पुस्तक को सरल भाषा में बनाया गया है। इस पाठ्यक्रम में बोलचाल की भाषा का उपयोग किया गया है। जरूरत के अनुसार तकनीकी षब्दों का उपयोग किया गया है। इस पाठ्यक्रम को इस तरह से बनाया है कि प्रषिक्षण केवल प्रषिक्षिका या सहयोगी पर ही केंद्रित नहीं रहे यानी सिर्फ पढ़ाने वाले ही बोलते न रहें बल्कि प्रषिक्षणार्थी भी पूरी तरह से भाग लेते रहें। हर प्रषिक्षणार्थी की सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया गया है।

हर सत्र का परिचय संस्थान की प्रषिक्षिका देती है। परिचय में प्रषिक्षिका पिछले सत्र का दोहराव भी करवाती हैं और बताती हैं कि इस सत्र में कौन से विषय की जानकारी मिलेगी और क्या–क्या सीखेंगे? जिन प्रषिक्षणार्थियों को पढ़ने, लिखने और समझने में कठिनाई होती है उन पर खास ध्यान व ज्यादा समय दिया जाता है।

समूह में सीखना–सिखाना : संस्थान की सभी प्रषिक्षणार्थी बहनों को आठ–दस समूहों में बांट दिया जाता है। जो बहनें एक साल का क्षेत्रीय स्वयं सेविका का प्रषिक्षण लेने आती हैं उन्हें हर समूह की सहायक प्रषिक्षिका बनाया जाता है। वे अपने समूह की बहनों को स्वास्थ्य, आध्यात्मिक, सिलाई का प्रषिक्षण देने में प्रषिक्षिका की सहायता करती हैं। संस्थान की प्रषिक्षिका इन्हें एक दिन पहले, अगले दिन प्रषिक्षणार्थियों को पढ़ाने का प्रषिक्षण देती हैं और फिर अगले दिन सहायक प्रषिक्षिकाएं अपने–अपने समूहों को उन्हीं विषयों पर पढ़ाती हैं। इस समय प्रषिक्षिकाएं वहीं रहती हैं जिससे अगर सहायक प्रषिक्षिकाओं को कोई कठिनाई होती है तो वे हल कर देती हैं और अगर वे कुछ पढ़ाना भूल जाएं तो प्रषिक्षिकाएं बताती हैं और अगर किसी के समूह के सदस्यों को कुछ समझ में नहीं आ रहा हो तो वे समझाती हैं। इस तरह से उन्हें प्रषिक्षण देने का अनुभव होता है और प्रषिक्षणार्थी उनसे अपनी समस्याओं को अच्छी तरह से समझते हैं। समूह में बढ़कर हिस्सा लेते हैं। वे सहायक प्रषिक्षिकाओं के सामने खुलकर बात करते हैं क्योंकि वे उनके साथ ही रहती हैं। इसका एक कारण समूह का आकार छोटा होना भी है। जिससे प्रत्येक प्रषिक्षणार्थी पर विषेष ध्यान रखा जाता है।

ये समूह पूरे छह महीने तक रहता है। ऐसा करने से उनमें स्वयं सेवा की भावना का विकास होता है और उन्हें अपने गाँव में जाकर औरों को भी प्रषिक्षित करने योग्य का व्यावहारिक प्रषिक्षण दिया जाता है। इस तरह से उनमें आत्मविष्वास बढ़ता है, वे अपने परिवार, आस–पड़ोस व गाँव के विकास के लिए काम करती हैं और उन्हें गाँव व समाज में अपनी पहचान बनाने का मौका मिलता है।

कटाई–सिलाई का पाठ्यक्रम

कटाई–सिलाई पुस्तक का विकास

कटाई–सिलाई का प्रषिक्षण हमेषा महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। इसे एक आसान व सुरक्षित रोजगार माना गया है।

कटाई–सिलाई संस्थान के प्रषिक्षण कार्यक्रमों का एक अभिन्न अंग है। यहाँ की प्रषिक्षण पद्धति और पाठ्यक्रम 'बहाई' दर्षन से प्रेरित है।

''तुममें से प्रत्येक के लिए यह आवष्यक है कि किसी व्यवसाय या पेषे में स्वयं को लगाओ, जैसे षिल्प या व्यापार।
ऐसे किसी कार्य में तुम्हारे व्यस्त होने को ईष्वर की उपासना का दर्जा दिया है।''

पढ़ाने के मुख्य तरीकों में सहभागिता, सीखना–सिखाना और हम–उम्र षिक्षण प्रणाली षामिल हैं। संस्थान का प्रेरणात्मक वातावरण सीखने को और भी सहज तथा आसान बना देता है। इस प्रषिक्षण से प्रषिक्षणार्थियों में 'सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन कार्यकर्ता' के रूप में सेवा देने की क्षमताओं का विकास होता है।

इस विषय पर पुस्तक तो अनेकों हैं परंतु ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों की महिलाएं जिन्हें कभी स्कूल जाने का अवसर ही नहीं मिला या किसी मजबूरी के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी, इनके लिए ऐसी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं थी जो कि कटाई–सिलाई सीखने के लिए सरल भाषा में, देखकर, सुनकर, समझकर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नई दिल्ली की परीक्षा दे पातीं।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान द्वारा ''कटाई–सिलाई एवं पोषाक निर्माण'' पर पुस्तक प्रकाषित है, जो कि बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं होती है। यह दो माड्यूल पर आधारित है। इसका उपयोग जो लड़कियां कम से कम आठवीं पास हो वह कर सकती हैं। इन माड्यूलों में ज्यादातर तकनीकी व व्यावहारिक भाषा अंग्रेजी में है जो कि गाँव की उन लड़कियों या महिलाओं ने न सुनी थी और न ही पढ़ी है। इसलिए वे इसे अपना नहीं पाई। इन कारणों से इन महिलाओं को प्रषिक्षण देना बहुत कठिन था।

क्षेत्रीय परिस्थितियों व समय की मांग, इसको पूरा करने के लिए बरली संस्थान ने ''आओ कटाई–सिलाई सीखें व सिखाएं'' नामक पुस्तक 23 सालों के सतत् प्रयोग, अनुभव, षोध के बाद तैयार की है।

पाठ्यक्रम के उद्देष्य

इस पाठ्यक्रम के उद्देष्य इस प्रकार हैं।

- ग्रामीण व आदिवासी महिलाएं प्रषिक्षण में कटाई सिलाई सीखकर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान (नेषनल ओपन स्कूल) की परीक्षा देने योग्य हो जाती हैं।
- परीक्षा में उत्तीर्ण प्रषिक्षणार्थियों को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान द्वारा प्राप्त प्रमाणपत्र मिलता है जिसका उपयोग वे गैर सरकारी संस्थाओं में काम करने तथा स्वयं का रोजगार चलाने के लिए बैंक से ऋण ले सकती है।

- कुषल दस्तकार व सफल व्यवसायी बन सकें।
- प्रषिक्षण के माध्यम से उन्हें इस तरीके से सषक्त करना कि वे स्वयं व अपने परिवार तथा समुदाय के विकास में योगदान दे सकें।

पाठ्यक्रम की संरचना

प्रषिक्षण के पहले दिन 'स्वागत एवं संस्थान का परिचय, प्रषिक्षिका/ सहयोगी के गुण/सफल टेलर के गुण का सत्र होता है। इस सत्र में प्रषिक्षणार्थियों का संस्थान में स्वागत किया जाता है और उन्हें संस्थान और पाठ्यक्रम का परिचय दिया जाता है। इसके बाद ही पाठ्यक्रम का पहला पाठ षुरू होता है।

हर पाठ में कई सत्र होते हैं। सत्र में सत्र योजना दी गई जिसमें क्या पढ़ाया जाएगा और कैसे पढ़ाया जाएगा उसके दिषा–निर्देष दिए गए हैं। हर दिन दो सत्र पूरा किया जाता है और हर सत्र में कुछ चरण दिए गए हैं।

पाठ को षुरू करने से पहले प्रषिक्षिका पाठ के परिचय और उद्देष्य पर चर्चा करती है। उद्देष्य वे मापदंड होते हैं जिनसे यह पता चलता है कि प्रषिक्षणार्थियों को पाठ के अंत तक किस योग्य हो जाना चाहिए। इससे प्रषिक्षणार्थियों के साथ–साथ प्रषिक्षिका को भी मदद मिलती है। इनसे वो पाठ के अंत में प्रषिक्षणार्थियों तथा सहयोगियो का मूल्यांकन कर पाती है और जान पाती है कि पाठ के षुरूआत में हमने जो उद्देष्य बनाए थे, वो पूरे हुए हैं या नहीं। सत्र की षुरूआत में सत्र का परिचय और अंत में सत्र का समापन प्रषिक्षिका करती है।

यह पाठ्यक्रम अन्य पाठ्यक्रमों से अलग है। इस पाठ्यक्रम को निरक्षर व अर्द्धसाक्षर महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है। पुस्तक में सबसे पहले सिलाई मषीन का परिचय करवाते हैं। इंच टेप के उपयोग के साथ ही इंच और सेंटीमीटर में अंतर समझाया जाता है।

महिलाएं स्वयं कटाई–सिलाई करना सीखती हैं, सबसे पहले उन्हें साक्षर किया जाता है, जिससे वे पुस्तक को पढ़कर व समझकर दूसरों को समझा सकें और सिलाई सीख सकें।

पुस्तक की विषेषताएं

बरली ग्रामीण विकास संस्थान की पुस्तक ''आओ कटाई–सिलाई सीखें और सिखाएं'' में निम्नलिखित विषेषताएं हैं।

- प्रषिक्षणार्थी को पहले पढ़ना–लिखना व बोलना सिखाया जाता है।
- यह पुस्तक 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय' के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर बनाई गई है।
- पुस्तक को पढ़कर व चित्रों को देखकर कटाई–सिलाई आसानी से सीखते हैं।
- बोलचाल की, भाषा, सरल और आसान है। स्थानीय हिन्दी व अंग्रेजी भाषा के षब्दों का प्रयोग सरल है जिससे विषय को समझने में आसानी होती है। कुछ षब्द अंग्रेजी में ज्यादा प्रचलित हैं इसलिए दोनों भाषाओं के षब्द साथ–साथ दिए हैं।
- अनुभव के आधार पर अलग–अलग सत्रों में कितना समय एक कपड़े की कटाई–सिलाई को सीखने में लग रहा है इसको भी लिखा गया है जिससे वह भी अपने समय में सीख ले।
- पुस्तक के तीन भाग हैं :– सैद्धांतिक, प्रायोगिक व परीक्षा की तैयारी । सैद्धांतिक पुस्तक से पढ़कर, प्रायोगिक पुस्तक से प्रयोग करते हैं और अंत में परीक्षा की तैयारी करते हैं।
- प्रत्येक सत्र में एक ही विषय के भाग को पूरा किया गया है जिससे चरणबद्ध तरीके से ही प्रषिक्षणार्थी आगे बढ़ें।
- कटाई–सिलाई के प्रत्येक चरण को चरणबद्ध तरीके से ऐसी भाषा में समझाया गया है जैसे कोई कर रहा हो।
- स्थानीय लोगों पर ही नाप लेना दिखाया गया है, जिससे सजीवता व अपनापन अधिक है।
- मषीन की जानकारी व उसके प्रत्येक पुर्जे का चित्रण इतना सजीव है कि देखकर ही मषीन के पुर्जों को समझ सकते हैं व आवष्यकता होने पर सुधारा भी जा सकता है।
- कटाई–सिलाई से संबंधित प्रत्येक तकनीक को स्पष्ट किया गया है।
- कपड़े के चुनाव से लेकर कटाई, सिलाई, फिनिषिंग व प्रेस तक की सभी जानकारी विस्तार से व सरल तरीके से समझाई गई है ताकि कपड़ा सही और बढ़िया बन सके।
- कपड़ा सिलने के बाद कढ़ाई, बटन आदि से कपड़ों को आकर्षक बनाने की भी जानकारी है।
- पुस्तक में काम सीखने के बाद दोहराव भी करवाया गया है जिससे प्रषिक्षणार्थी पक्का सीख जाएं।

- पुस्तक में मौखिक व लिखित परीक्षा के प्रष्न दिए गए हैं जिन्हें पढ़कर प्रषिक्षणार्थी या सीखने वाला अपनी सफलता का अनुमान स्वयं कर सकता है कि वह कितना सीखा है और कितना भूल गया, कहां और सीखने की आवष्यकता है।
- किसी विषय या पाठ को षुरू करने से पहले ही प्रषिक्षणार्थी को यह मालूम हो जाता है वह इस सत्र के बाद किस योग्य हो जायेगा ये बात उसे प्रषिक्षण लेने के लिए प्रेरणा देती है। पुस्तक पढ़ने के बाद स्वयं की क्षमता बढ़ जायेगी, उनके मन का डर भी दूर हो जायेगा व आगे बढ़ने की सही दिषा मिल जाएगी।
- पुस्तक पढ़कर प्रषिक्षणार्थी सीखकर सिखाने की योग्यता के साथ–साथ उसे उपयोग करके पैसे कमा सकती है।
- पुस्तक को पढ़कर प्रषिक्षणार्थी या व्यक्ति अपना रोजगार आरंभ कर सकता है जिससे बेरोजगारी उन्मूलन में मदद होगी।

संस्थान सन् 1998 से राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त है।

कटाई–सिलाई पुस्तक में पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया गया है : (क) सैद्धांतिक (ख) प्रायोगिक (ग) परीक्षा की तैयारी। कटाई–सिलाई पाठ्यक्रम में कुल 29 पाठ हैं। इन्हें 220 सत्रों में बांटा गया है। हर दिन तीन घंटे के प्रषिक्षण में एक घंटा सैद्धांतिक व दो घंटे प्रायोगिक काम किया जाता है। इसका कारण महिलाओं की रूचि को बनाए रखना है।

1. **सैद्धांतिक विषय** – इसमें 14 पाठ हैं : सिलाई मषीन का परिचय, सिलाई में काम आने वाले औजार, हाथ के टाँके, कटाई–सिलाई में उपयोग होने वाले तकनीकी षब्द, नाप लेना, ड्राफ्ट और पेपर पैटर्न, कपड़े की सिलाई, कटाई–सिलाई, कपड़े को प्रेस व घड़ी करना, कपड़े का चुनाव और रंगो का मिलान करना, कपड़ों का अनुमान, परिधान (ड्रेस) डिजाइनिंग और कपड़े की फिटिंग, बॉडिस ब्लॉक, बदलाव (संषोधन) एवं तालमेल (सामंजस्य), व्यक्तित्व का विकास व ग्राहक के साथ व्यवहार का उचित ढंग।

2. **प्रायोगिक विषय –** इसमें 14 पाठ हैं : हाथ के टाँके और सजावटी सामान, मषीन की सिलाई, सीम, प्लीट्स, डार्टस, टक्स व पाइपिंग, कपड़ा बनाते समय ध्यान रखने वाली बातें, सादा पेटीकोट, छह कली वाला पेटीकोट, झबला, सादी फ्रॉक, चड्डी, टुक्की, (कटोरी) वाला ब्लाऊज, सादा ब्लाऊज, कुरती, सलवार, चूड़ीदार पायजामा, षर्ट।

3. **परीक्षा की तैयारी –** राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान की कटाई–सिलाई की परीक्षा दो भागों में होती है एक सैद्धांतिक और दूसरी प्रायोगिक। सैद्धांतिक और प्रायोगिक के हर पाठ के अंत में पाठ का दोहराव परीक्षा ली जाती है। सैद्धांतिक परीक्षा दो तरह से होती है एक मौखिक और दूसरी लिखित। मौखिक परीक्षाएं षुरूआत के पाँच पाठों में षामिल हैं। यह परीक्षाएं नवसाक्षर प्रषिक्षणार्थियों के लिए होती हैं। पाठ छह के अंत तक प्रषिक्षणार्थी लिखित परीक्षाएं देती हैं।

हर पाठ के अंत में प्रषिक्षणार्थियों और सहयोगियों की परीक्षा ली जाती है। पहले पाँच पाठों में प्रषिक्षणार्थियों की मौखिक परीक्षा ली जाती है क्योंकि इस समय तक उन्हें लिखना नहीं आता। मौखिक परीक्षा सहयोगी लेते हैं। मौखिक परीक्षा लेने की पूर्व संध्या को सहयोगी स्वयं लिखित परीक्षा देती हैं। छठे पाठ की समाप्ति के बाद हर पाठ के अंत में सहयोगी और प्रषिक्षणार्थी लिखित परीक्षा देती है। सभी लिखित परीक्षाएं संस्थान की प्रषिक्षिका लेती हैं।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान के द्वारा कटाई–सिलाई की परीक्षा : 6 माह के कटाई–सिलाई के प्रषिक्षण के बाद सभी प्रषिक्षणार्थी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान की कटाई–सिलाई की परीक्षा देती हैं। इसमें एक लिखित व दूसरी प्रायोगिक परीक्षा है। लिखित परीक्षा में प्रष्नों के उत्तर लिखकर देना एवं प्रायोगिक परीक्षा में कपड़ा सिलकर बनाना होता है। इन दोनों परीक्षाओं में पास होना अनिवार्य है। दोनों परीक्षाओं की तैयारी साथ–साथ करवाई जाती है। जिससे दोनों विषयों में प्रषिक्षणार्थी उत्तीर्ण हो जाएं व अपने प्रषिक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त करें।

सत्र क्रमांक और षीर्षक

उद्देष्य

हर सत्र का उद्देष्य भी संस्थान की प्रषिक्षिका बताती है। उद्देष्य वे मापदंड होते हैं, जिससे यह पता चलता है कि प्रषिक्षणार्थियों को सत्र के अंत तक किस योग्य हो जाना चाहिए। इससे प्रषिक्षणार्थियों के साथ–साथ प्रषिक्षिका को भी मदद मिलती है। वे पाठ और सत्र के अंत में प्रषिक्षणार्थियों तथा सहयोगियों का मूल्यांकन कर पाती है और जान पाती है कि सत्र के षुरूआत में हमने जो उद्देष्य बनाए थे, वे पूरे हुए है या नहीं।

प्रषिक्षण सामग्री

प्रषिक्षण सामग्री, वह सामग्री होती है जिसका उपयोग पढ़ाने के लिए किया जाता है। प्रषिक्षिका प्रषिक्षण देने से पहले सामग्री तैयार करके

रखती हैं। सामग्री में कागज, कपड़ा, पेन, पेंसिल, रबर, चॉक, स्केल, इंच टेप, कैची, गुनिया, लेग षेपर, दर्जी कला कर्व, फ्रेंच कर्व, ट्रेसिंग व्हील, छिद्रक, टक मार्कर, हाथ की सुई, मषीन की सुई, धागा, अंगुष्तान, आस्तीन बोर्ड, प्रेस और पेंचकस आदि होते हैं।

सत्र योजना

सत्र योजना में कुछ चरण होते हैं।

चरण

चरण में प्रषिक्षणार्थियों को समझाने के लिए जानकारी और गतिविधियां होती हैं। चरण में सभी प्रषिक्षणार्थी भाग लेते हैं। हर चरण में बताया जाता है कि चरण को कौन संचालित करेगा। चरण संचालित करने के लिए चरण में दिषा–निर्देष दिए जाते हैं।

चरणों को पढ़ाने के लिए जो तरीके अपनाए जाते हैं, इस प्रकार हैं।

समूह चर्चा
उदाहरण
चित्र/उदाहरण पर चर्चा
प्रष्न और उत्तर
नमूने दिखाना
सूचना देना
जांच
व्यक्तिगत भागीदारी

नोटः *नोट में जानकारी देने वाले के लिए निर्देष दिए गए हैं।*

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

सत्र का समापन संस्थान की प्रषिक्षिका करती हैं। सत्र के अंत में पूरे सत्र में दी गई मुख्य जानकारियों का दोहराव करवाती है और इस सत्र की जानकारी को अगले सत्र के साथ जोड़ती है। समापन में प्रषिक्षिका के लिए नोट होता है जिससे उसे पता चलता है कि हर प्रषिक्षणार्थी को सत्र में दी गई जानकारी अच्छी तरह समझ में आ गई है या नहीं। अगर प्रषिक्षिका या सहयोगी में से किसी को भी यह लगे कि सत्र में दी गई जानकारी प्रषिक्षणार्थियों को अच्छी तरह से समझ में नहीं आई है तो प्रषिक्षिका उस जानकारी का दोहराव करवाती है।

षिक्षा का स्तर

हर समूह में निरक्षर, नवसाक्षर या साक्षर प्रषिक्षणार्थी होते हैं।

अपनी बोली

सहयोगी को अपने समूह के प्रषिक्षणार्थियों की बोली आती हो जिससे वे नई और कठिन जानकारियों को प्रषिक्षणार्थियों की बोली में समझा सकें। प्रषिक्षण के पहले कुछ सप्ताह तक प्रषिक्षणार्थियों को ज्यादा से ज्यादा जानकारी उनकी बोली में समझाई जाती है क्योंकि षुरूआत में उन्हें हिन्दी अच्छी तरह समझ में नहीं आती।

प्रषिक्षण के माध्यम

प्रषिक्षणार्थियों को कटाई–सिलाई का प्रषिक्षण नीचे लिखे तरीकों से दिया जाता है।

व्यावहारिक षिक्षा

व्यावहारिक षिक्षा इस प्रषिक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। संस्थान में छह माह/एक साल रहते हुए प्रषिक्षणार्थी कटाई–सिलाई के प्रषिक्षण में अलग–अलग तरह के कपड़ों को सिलना सीखती है। प्रषिक्षण के अंत तक वे अपने कला कौषल में पूर्ण निपुण हो जाती है। इस कला को सीखते समय वह धीरे–धीरे इस कला के माध्यम से सेवा की भावना को विकसित करती है और संस्थान में ही रहकर यहाँ पर पढ़ी जानकारी अपने व्यवहार और जीवन में उतारती है।

सक्रिय सहभागिता

कटाई–सिलाई प्रषिक्षण में उन्हें सक्रिय सहभागीदार बनाने के लिए नीचे लिखे तरीके अपनाए जाते हैं। इन तरीकों से प्रषिक्षणार्थी कक्षा में ज्यादा से ज्यादा भाग लेती है जिससे सीखने में आसानी होती है और रूचि बढ़ने के साथ–साथ विषय की समझ भी बढ़ती है।

चर्चा : सभी पाठों में सहयोगी और प्रषिक्षणार्थी आपस में कई विषयों पर चर्चा करते हैं। चर्चा करने से मन में नए–नए विचार आते हैं और अपनी बात दूसरों के सामने बिना किसी झिझक या डर के रख पाते हैं।

कथन : इस पाठ्यक्रम में प्रेरणात्मक कथनों का उपयोग किया गया है।

देखकर, सुनकर व प्रयोग कर

देखकर : चित्रों के माध्यम से जानकारी अच्छी तरह से, जल्दी, और प्रभावी तरीके से समझ में आती है। पाठ्यक्रम में हमने उन्हीं चित्रों का उपयोग करने की कोषिष की है जो इस पाठ्यक्रम को समझने में आसान हो।

सुनकर : पाठ का परिचय व समापन प्रषिक्षिका द्वारा दिया जाता है। प्रषिक्षिका प्रषिक्षणार्थियों के प्रष्नों को सुनकर उनका समाधान करती है उनकी समस्याओं को जानकर उन पर चर्चा की जाती है। इस तरह से प्रषिक्षणार्थी सुनकर अपनी कौषल का विकास करती है।

प्रयोग कर : प्रषिक्षिका द्वारा पाठ में दिए गए बातों का प्रायोगिक नमूना सभी सहयोगियों के सामने दिखाया जाता है उसके बाद सहयोगी अपने–अपने समूह में उस प्रयोग को करके देखते हैं। एक बार सीखी बात को प्रयोग कर इसे सही तरह से बनाना सीख लेती है। प्रयोग कर सीखने से वे कभी भी उस काम को करना नहीं भूलती है।

नमूने बनाना

प्रषिक्षणार्थी प्रायोगिक पाठ्यक्रम में दी गई जानकारी के अनुसार कपड़ों के नमूने बनाती है। यह नमूने उनके लिए मार्गदर्षन का काम करते हैं और उनमें उन कपड़ों को बनाने का विष्वास पैदा करते हैं।

नोट : सभी तरीकों में लचीलापन रहता है जो प्रषिक्षणार्थियों की आवष्यकताओं, समझने के स्तर और रूचि के अनुसार परिवर्तित किए जा सकते हैं।

दोहराव – दोहराव करना जानकारियों को याद रखने के लिए जरूरी है। इसी कारण से सहयोगी प्रषिक्षिकाएं अगले दिन पढ़ाने के पहले, पिछले दिन पढ़ाई हुई जानकारी का दोहराव करवाती हैं। हर पाठ और अध्याय के अंत में पूरे पाठ और अध्याय का दोहराव करवाती है। रात को भी प्रषिक्षिणार्थी अपने समूह में दोहराव करते हैं। साप्ताहिक परीक्षाओं के द्वारा भी प्रषिक्षिणार्थियों को दोहराव हो जाता है।

परीक्षा का अभ्यास

कटाई–सिलाई का पाठ्यक्रम एक बार पढ़ने के बाद परीक्षा के 20 से 25 दिन पहले रोज संस्थान में परीक्षा ली जाती है। सैद्धांतिक परीक्षा की तैयारी के लिए 1998–2007 की 12 प्रष्न पत्रिकाओं का अध्ययन कर उसके आधार पर प्रष्न पत्र बनाए गए हैं। प्रष्न पत्रिकाओं की परीक्षा ली जाती है। परीक्षा लेने के पहले पाठ का दोहराव किया जाता है। इन प्रष्नों को परीक्षा में बार–बार पूछते हैं और प्रषिक्षणार्थियों द्वारा लिखे उत्तरों का मूल्यांकन करते हैं। मूल्यांकनों का मापदण्ड इस तरह होता है :–

1. प्रष्नों को समझ पा रहे या नहीं
2. उत्तर पूरा लिख पा रहे या नहीं
3. उत्तर लिखते समय प्रष्न नं. लिख रहे हैं या नहीं
4. खाली स्थान और सही गलत को हल करने पर ध्यान दे रहे या नहीं
5. अंतर स्पष्ट करने वाले प्रष्न की समझ है या नहीं

उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय प्रत्येक प्रषिक्षणार्थी के ऊपर खास ध्यान दिया जाता है। हर प्रषिक्षणार्थी के अंदर परीक्षा के लिए जो झिझक और डर होता है उसे परीक्षाओं के माध्यम से खतम करने की कोषिष की जाती है।

इसी तरह प्रायोगिक परीक्षा की तैयारी करवाते हैं, प्रायोगिक परीक्षा के लिए जो कपड़े संस्थान में सिलना सीखते हैं। उन कपड़ों को बनाने के तरीके को बार–बार करवाया जाता है। ये कपड़ा बनाते समय सारे चरणों को ध्यान में रखते हुए कपड़ा तैयार करते हैं। जैसे नाप लेना, नाप के आधार पर ड्रॉफ्ट बनाना, ड्रॉफ्ट की लाइनों को काटकर पेपर पैटर्न बनाना, पेपर पैटर्न की सहायता से कपड़े पर ले–आउट करना, कपड़ा काटना, कपड़ा पूरा सिलने के बाद फिनिषिंग और प्रेस करना, सभी क्रियाओं की तैयारी करवाते हैं जिससे वे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान की परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकें।

स्वागत, प्रषिक्षण का परिचय, सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी के गुण, सफल टेलर के गुण और कौषल

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

संस्थान में आप सबका स्वागत है। ये संस्थान एक बड़ा परिवार है। आज से आप सब इस परिवार के सदस्य हैं। यह हमारे छह महीने के प्रषिक्षण का पहला दिन है। इसलिए आज हम पहले यह जानेंगे कि इन छह महीनों में हम क्या–क्या सीखेंगे और फिर समझेंगे कि अगर हमें सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी और सफल टेलर बनना है तो हममें कौन–कौन से गुण या कौषल होने चाहिए।

उद्देष्य : इस सत्र के पूरा होने तक प्रषिक्षणार्थी इस योग्य हो जाएं कि वेः

* समझ सकें कि प्रषिक्षण के दौरान वे कौन से विषय सीखेंगे।
* महसूस कर सकें कि एक सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी बनने के लिए उनमें कौन से गुण होने चाहिए।
* सफल टेलर के गुण और कौषल को समझ सकें।

सत्र योजना

चरण 1: प्रषिक्षिका द्वारा प्रषिक्षणार्थियों का स्वागत और प्रषिक्षण का परिचय

– *प्रषिक्षणार्थियों को एक गोले में बैठाकर कहें,*

हम छह महीने तक पूरे समय आपस में बहनों की तरह प्रेम से रहेंगे। हमेषा एक–दूसरे की मदद करेंगे। हमें बहुत खुषी है कि देष के कई प्रांतों से आप इतनी दूर आई हैं।

– *नीचे लिखे प्रष्न प्रषिक्षणार्थियों से एक–एक करके पूछें और उनके उत्तर सुनें,*

''आप कैसे हैं?''

''आपको यहां कैसा लग रहा है ?''

''यहां आने से पहले आपने संस्थान और प्रषिक्षण के बारे में क्या सोचा था ?''

''आप में से कितने लोग सिलाई करना जानते है?''

हो सकता है कि इस प्रष्न का उत्तर देने के लिए कुछ हाथ उठे या कुछ प्रषिक्षणार्थी आगे आएं। जब प्रषिक्षिका उत्तर सुन ले तो कहें कि आपमें से कुछ ने सिलाई सीखी होगी या कुछ ने सिलाई करते देखा होगा। आपके जीवन के विकास में प्रषिक्षण की बहुत जरूरत है। प्रषिक्षण से हम सही ढंग से काम करने के लिए तैयार होते हैं। कटाई–सिलाई आप सभी को पसंद है। केवल जानकारी से कढ़ाई, सिलाई नहीं सीखी जा सकती है। प्रषिक्षण लेने से आप अच्छी तरह से सीख पाएगें व कम समय में अच्छा काम कर सकेगें। इसके लिए पढ़ना–लिखना बहुत जरूरी है। आप में से ज्यादातर स्कूल नहीं गए हैं या गए तो कम समय के लिये। कटाई–सिलाई के साथ पहले तीन महीने तक पढ़ना–लिखना सीखेंगे। कटाई–सिलाई प्रषिक्षण में इंच टेप की सहायता से गिनती सीखती हैं। लम्बाई, चौड़ाई व ऊंचाई नापना, नाप लिखना, साधारण कढ़ाई में अपना नाम बनाती हैं। इसी दौरान वे सीखे गए टाँको के नाम, मषीन के पुर्जे के नाम और उसमें उपयोग होने वाले औजारों के नाम बोलना और लिखना सीखती हैं। ड्रॉफ्ट बनाते समय नाप के अनुसार अलग–अलग कपड़ों को बनाते समय जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग करना सीखते हैं। इसलिए गिनती, अक्षरों और षब्दों का ज्ञान जरूरी है।

चरण 2: प्रषिक्षिका द्वारा प्रषिक्षण संबंधी जानकारी

– *नीचे लिखी जानकारी प्रषिक्षणार्थियों को पढ़कर समझाएं।*

छह महीने के सामुदायिक स्वयं सेविका प्रषिक्षण में आप कटाई–सिलाई के साथ स्वास्थ्य षिक्षा, व्यक्तित्व विकास, पर्यावरण और बागवानी का प्रषिक्षण लेंगी। प्रषिक्षण से वे आत्मनिर्भर बनेंगी और किसी भी प्रषिक्षण को व्यवसाय या काम धन्धा में बदलकर अपनी आय का साधन बना सकती हैं। संस्थान में हिन्दी साक्षरता सिखाई जाती है जिसके द्वारा महिलाएं अपनी समस्या और जिम्मेदारी को समझती हैं। अपने अधिकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करके, खुद अपनी समस्याएँ दूर करना सीखती हैं। अपने आसपास की दुनिया को समझती हैं। साधारण हिसाब किताब करना सीखती हैं। साधारण पत्र लिख–पढ़ सकती हैं। साक्षरता के दो प्रषिक्षण होते हैं एक प्रषिक्षण में निरक्षर बहनों को साक्षर किया जाता है और दूसरा प्रषिक्षण साक्षर बहनों को दिया जाता है जिसमें दूसरों को साक्षर करना सिखाया जाता है। हर रोज तीन घंटे साक्षरता की कक्षा लगती है। एक घंटा साक्षर करने की, एक घंटा साक्षरों का प्रषिक्षण और एक घंटा सभी का अभ्यास।

प्रषिक्षण के षुरू में सभी प्रषिक्षणार्थियों को कापी, पेन, पट्टी, किताबें, इंच टेप दे दी जाती है। इसके साथ ही साक्षरता के लिए उपयोग में आने वाला जैसे बोर्ड, डस्टर, चॉक, कापी, किताब, अक्षर, कार्ड, इंच टेप कैसे काम में लाते हैं, यह अच्छे से बताया जाता है।

कक्षा में पढ़ाई के लिए कक्षा को छोटे–छोटे समूह में बांटते हैं। छोटे समूहों में पढ़ाना सरल होता है तथा हर एक प्रषिक्षणार्थी पर अच्छी तरह से ध्यान दिया जाता है। हर समूह में आठ सदस्य होते हैं। हर समूह में एक थोड़ी षिक्षित प्रषिक्षणार्थी होती है जो पांचवी, छठी या आठवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ देती है। उसे **सहयोगी** कहते हैं। सहयोगी पूरे प्रषिक्षण में प्रषिक्षिका की मदद करती हैं। प्रषिक्षण से विषय का ज्ञान बढ़ता है। आत्मविष्वास बढ़ता है जो न तो खरीदा जा सकता है न कहीं से ला सकते हैं। प्रषिक्षण व अभ्यास से आपका काम अधिक अच्छा हो जाता है। साक्षर होकर कला, ज्ञान सीख सकते हैं। साक्षर होने के बाद हम स्वयं को आगे बढ़ाते ही हैं साथ में अपने परिवार और अपने गॉव के लोगों को प्रषिक्षित कर सकते हैं। प्रषिक्षण का उद्देष्य है कि आप स्वयं अपना विकास कर सकें और वापस जाकर अपने परिवार व समुदाय में सेवा दे सकें।

चरण 3: प्रषिक्षिका द्वारा पाठ्यक्रम की जानकारी

– *नीचे लिखी जानकारी प्रषिक्षणार्थियों को पढ़कर सुनाएं।*

हमने चरण एक में जाना कि संस्थान में छह महीने रहकर कटाई–सिलाई सीखेंगे जिससे हम अपने व अपने परिवार के जीवन को बेहतर बना सकेंगे। हम आने वाले छह महीने के प्रषिक्षण में नीचे लिखे विषयों के बारे में सीखेंगे।

भाग एक – सैद्वांतिक

पाठ एक : सिलाई मषीन का परिचय
पाठ दो : सिलाई में काम आने वाले औजार
पाठ तीन : हाथ के टाँके
पाठ चार : कटाई–सिलाई में उपयोग होने वाले तकनीकी षब्द
पाठ पाँच : नाप लेना
पाठ छह : ड्रॉफ्ट, पेपर पैटर्न और ले आउट
पाठ सात : कपड़े की सिलाई
पाठ आठ : कटाई–सिलाई
पाठ नौ : कपड़े को प्रेस व घड़ी करना
पाठ दस : कपड़े का चुनाव और रंगो का मिलान करना
पाठ ग्यारह : कपड़ों का अनुमान
पाठ बारह : परिधान (ड्रेस) डिजाइनिंग और कपड़े की फिटिंग
पाठ तेरह : बॉडिस ब्लॉक, बदलाव (संषोधन) एवं तालमेल (सामंजस्य)
पाठ चौदह : स्वयं सहायता समूह विकास की कुंजी

भाग दो – प्रायोगिक

पाठ एक : हाथ के टाँके और सजावटी सामान
पाठ दो : मषीन की सिलाई, सीम, प्लीट्स, डार्टस, टक्स व पाइपिंग
पाठ तीन : कपड़ा बनाते समय ध्यान रखने वाली बातें
पााठ चार: सादा पेटीकोट
पाठ पाँच: छह कली वाला पेटीकोट
पाठ छह : झबला
पाठ सात : सादी फ्रॉक
पाठ आठ : चड्डी
पाठ नौ : टुक्की (कटोरी) वाला ब्लाऊज
पाठ दस : सादा ब्लाऊज
पाठ ग्यारह : कुरती

पाठ बारह : सलवार

पाठ तेरह : चूड़ीदार पाजामा

पाठ चौदह : जेन्ट्स षर्ट

भाग तीन – परीक्षा की तैयारी

पाठ एक : परीक्षा की तैयारी

इन 29 पाठों को हम 220 सत्रों में पूरा करेंगें।

सैद्धांतिक के 14 पाठ, प्रायोगिक के 14 पाठ एवं परीक्षा की तैयारी का 1 पाठ को पढ़ेंगे, समझेंगे, सीखेंगे और उन पर चर्चा करेंगे। उसके बाद हम पूरे पाठ्यक्रम का दोहराव करेंगे। सैद्धांतिक पाठों को पढ़कर लिखित परीक्षा की तैयारी करेंगे और प्रायोगिक पाठों में कपड़े के नमूने सिलना सीखेंगे, प्रायोगिक परीक्षा की तैयारी करेंगे। हम दोहराव, अभ्यास, मौखिक और लिखित परीक्षा आदि के द्वारा कटाई–सिलाई की राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान की परीक्षा की तैयारी करेंगे। कटाई–सिलाई की कक्षा में हम जो सिलाई का तरीका सीखेंगे, उसे संस्थान में रहते हुए प्रयोग करके भी देखेगें।

चरण 4: प्रषिक्षिका द्वारा सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी के गुण और कौषल पर चर्चा

– *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें*

''एक सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी में कौन–कौन से गुण होने चाहिए?''

– *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें और उनके उत्तर पट्टी पर लिखें।*

– *पहले उन्हें पट्टी पर लिखे गुण पढ़कर सुनाएं और उसके बाद समझाएं।*

– *अगर वे किसी बात पर सहमत नहीं हैं, तो उनसे चर्चा करें।*

एक सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी बनने के लिए हम सबमें कुछ खास गुण और कौषल होना जरूरी है। हो सकता है इनमें से कई गुण और कौषल आपमें न हों, इसलिए अपने व्यवहार और जीवन में इन्हें अपनाना होगा। इन छह महीनों में अपने आप को एक सफल सहयोगी साबित करने की कोषिष करनी होगी।

प्रषिक्षिका/सहयोगी के गुण

- प्रषिक्षिका/सहयोगी को विनम्र होना चाहिए।
- साहस व परिस्थिति का सामना करने वाली होना चाहिए।
- सेवा की भावना हो।
- प्रषिक्षणार्थियों से मित्रतापूर्ण व्यवहार हो।
- प्रषिक्षणार्थियों के सामने ऐसे उदाहरणों को पेष करें जो उनके जीवन के साथ जुड़े हों।
- कक्षा को रोचक बनाने वाली हो।
- समय–समय पर प्रषिक्षणार्थियों को सीखने के लिए प्रषंसा, बढ़ावा देने वाले तरीकों से प्रेरित करें ताकि सीखने वाले उत्साहपूर्वक सीखें।
- स्वयं की गलतियों को स्वीकारने वाली हो।
- प्रषिक्षणार्थियों की गलतियों को माफ कर उन्हें आगे बढ़ाने वाली हो।

प्रषिक्षिका/सहयोगी के कौषल

- प्रषिक्षिका को विषय की पूरी समझ हो।
- प्रषिक्षिका पुस्तक में बताए गए तरीके के अनुसार पढ़ाए।
- उदाहरण सीखने वालों की संस्कृति और परिवेष से होने चाहिए।
- हर पोषाक को बनाना, सिखाते समय पुस्तक में दिए गए निर्देषों का पालन करें जैसे नाप लेना, कागज पर ड्रॉफ्ट बनवाना, पेपर पैटर्न काटना, कपड़े पर निषान लगाना, कपड़ा कटवाना और कटे टुकड़ों को जोड़कर सिलना।
- प्रषिक्षणार्थियों को कक्षा में सक्रिय करने के लिए प्रषिक्षणार्थियों से ही विषय से संबंधित काम करवाने चाहिए।

- प्रषिक्षणार्थियों की झिझक को खतम करने के लिए उन्हें सबके सामने विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- तेज और साधारण प्रषिक्षणार्थियों में तालमेल बिठाकर चलना चाहिए।
- सिखाने के नए–नए तरीकों की खोज कर उन्हें कक्षा में प्रयोग करना चाहिए।

एक सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी के व्यवहार

- हर विषय जानने और उसे सीखने की इच्छा और सेवा करने की भावना होनी चाहिए। सीखने वालों की बात आसानी से समझने और महसूस करने की क्षमता होनी चाहिए।
- पाठ का उद्देष्य स्पष्ट होना चाहिए और उद्देष्य को ध्यान में रखकर ही पढ़ाना चाहिए।
- अपना पूरा ध्यान विषय–वस्तु पर लगाना चाहिए। समूह की चर्चा पर पूरा ध्यान होना चाहिए, जिससे समूह चर्चा करते हुए विषय से भटक न जाए।
- स्वयं अनुषासित और समय का पाबंद होना चाहिए, जिसे देखकर सीखने वाले भी वैसे ही बन सकें।

ये सब गुण होने से प्रषिक्षणार्थी कक्षा में मन लगाकर सीखेंगे, सिखाने वाले पर विष्वास करेंगे, कक्षा में उन्हें बहुत मजा आएगा, विषय के प्रति उनकी रूचि और लगन बढ़ेगी और कक्षा में सीखने–सिखाने के लिए एक सहज वातावरण बनेगा।

चरण 5: प्रषिक्षिका द्वारा सफल टेलर के गुण और कौषल पर चर्चा

– *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें :*

''एक सफल टेलर में कौन–कौन से गुण होने चाहिए?''

– *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें और उनके उत्तर पट्टी पर लिखें।*

– *पहले उन्हें पट्टी पर लिखे गुण पढ़कर सुनाएं और उसके बाद समझाएं।*

– *अगर वे किसी बात पर सहमत नहीं हैं, तो उनसे चर्चा करें।*

सफल टेलर के गुण

''कला हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है, किसी भी तरह की कला कौषल से हम सामाजिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकते हैं। आत्मनिर्भर होकर ही हम अपना, अपने परिवार और समुदाय के विकास में अहम भूमिका निभा सकते हैं।''

इस प्रषिक्षण के बाद आप टेलर बनेंगे। टेलर बनने के लिए आप को काम करना होगा। काम को करने के लिए बहुत सारे गुणों की जरूरत होगी। इन गुणों को ध्यान में रखकर ग्राहक के साथ व्यवहार करेंगे तो ही हम सफल टेलर बन सकते है। सफल टेलर के निम्नलिखित गुणों का होना जरूरी है जो इस प्रकार है :–

1. काम ही पूजा – दुनिया में कोई भी काम छोटा या बड़ा नही होता। हर काम अपने आपमें महान होता है। जब हम काम को पूरी श्रद्धा से करते हैं तो वह काम ईष्वर की पूजा के समान बन जाएगा। इसलिए हमें कोई भी काम करना हो तो उसे दिल और दिमाग से करना चाहिए व ईष्वर की पूजा समझकर करना चाहिए। सच्चे मन से किया गया काम ईष्वर की पूजा ही होती है।

टेलर का काम भी अपने आप में महत्वपूर्ण है। हमारे मौलिक जरूरतों में रोटी, कपड़ा और मकान है। इसलिए कपड़े के बिना जीने की कल्पना नहीं की जा सकती और यह एक आजीविका का साधन है।

2. ईमानदारी – हमारे कामों में ईमानदारी होना चाहिए जैसे कोई इंसान ने कपड़ा सिलने को दिया है तो उसके नाप व फिटिंग के अनुसार कपड़े को तैयार करने के बाद हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि बचा हुआ कपड़ा उसे वापस कर दें। जिससे हमारी ईमानदारी का पता चलेगा। अगर हम ईमानदार नही होगें तो हमारे पास कोई कपड़ा सिलवाने नहीं आयेगा। इससे टेलर के काम का नुकसान होता है, अगर टेलर ईमानदार नहीं होगा तो धीरे–धीरे यह बात खुल जाएगी और लोगों का विष्वास कम हो जाएगा। इस कारण टेलर का काम अच्छे से नहीं चल पाएगा।

3. आत्मविष्वास – आपको हर काम आत्मविष्वास से करना चाहिए। जो षिक्षा, जानकारी, उम्र व काम के अनुभव के साथ–साथ बढ़ता है। हम अनजान लोगों के बीच में भी बिना किसी डर के काम करें। कोई भी काम करते समय यह सोचें इस काम को मैं आसानी से कर सकती हूं। इससे निष्चित ही काम में सफलता मिलेगी और आत्मविष्वास बढ़ेगा। अतः एक टेलर में आत्मविष्वास होना चाहिए ताकि वह काम को पूरी सफलतापूर्वक कर सकें।

4. विष्वासपात्रता – *“यदि कोई मनुष्य बहुत अच्छा काम करे किन्तु पूरी तरह विष्वसनीयता और ईमानदारी में थोड़ा सा भी असफल रहे तो उसके अच्छे कार्य एक सूखी लकड़ी की तरह हो जायेगें और उसकी असफलता एक आत्मधाती (स्वयं आत्मा को जलाने वाली) अग्नि के समान बन जायेगी। किन्तु यदि दूसरी ओर वह अपने सारे कामकाज में असफल हो जाएं फिर भी विष्वसनीयता और ईमानदारी के साथ आचरण करे तो उसके सारे दोष तत्काल ठीक कर दिए जाएगें, सारे अज्ञान दूर हो जाएगें और सारी असमर्थताएं समाप्त हो जायेगीं। हमारा तात्पर्य यह है कि प्रभु की दृष्टि में सद्‌गुण पूर्णताओं का आधार है। इस गुण से वंचित कोई भी व्यक्ति सब कुछ से वंचित रह जायेगा।*

इसलिए हर परिस्थिति में विष्वासपात्र होना चाहिए जैसे–उदाहरण के लिए एक महिला ने ब्लाऊज सिलने को दिया और कहा कि यह ब्लाऊज उसे अपने भाई की षादी में पहनना है। उसी दिन ब्लाऊज तैयार करके देना चाहिए जिस दिन ब्लाऊज सिलकर देने का वादा किया था, तो हम उस महिला के प्रति विष्वासपात्र बनते है। वह आप पर विष्वास करेगी तथा अपने आसपास के लोगों को भी बताएगी। दूसरी बार आएगी तो अपने साथ दो नए ग्राहक लेकर आएगी। इस तरह आपके पास काम ज्यादा आता जाएगा अगर आप वायदे के अनुसार काम पूरा करके देते रहेंगे तो उनका आपके प्रति विष्वास बना रहेगा।

5. समय की पाबंदी– अगर टेलर के पास पहले से सिलाई का काम है तो उसे ज्यादा काम करके समय पर कपड़े सिलकर देना चाहिए, जैसे–त्यौहार, षादी आदि के समय सिलाई ज्यादा होती है। ऐसे में समय का ध्यान रखकर ग्राहक के कपड़े लेने चाहिए, अगर सिलने के लिए समय नहीं है तो ग्राहक को स्पष्ट बोल देना चाहिए कि सिलने के लिए समय नहीं है। यदि कपड़ा लें तो कपड़ा सिलने के लिए ज्यादा दिन का समय ले सकते हैं, अगर ग्राहक को मंजूर होगा तो वह अपना कपड़ा देगा। टेलर को हमेषा समय पर कपड़ा सिलकर ग्राहक को दे देना चाहिए इससे ग्राहक और टेलर दोनों ही खुष रहते हैं।

6. प्रेम–

मुझसे प्रेम कर ताकि मैं भी तुझसे प्रेम करूँ। यदि तू मुझसे प्रेम नहीं करेगा तो मेरा प्रेम भी तुझ तक कदापि नहीं पहुंचेगा। रे सेवक, इसे जान ले।श

अगर आप किसी का प्रेम पाना चाहे तो उसे भी प्रेम देना होगा। उसी तरह एक सफल टेलर बनने के लिए अपने काम से प्रेम करना अति आवष्यक है। अपने ग्राहकों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करेगें तभी ग्राहक आपके पास आना पसंद करेगें।

7. विनम्रता–

विनम्र वाणी मानव ह्रदय का लौहमणी है।

हमारी बोलचाल बहुत विनम्र होनी चाहिए। इसलिए एक सफल टेलर को अपने ग्राहकों के साथ हमेषा विनम्र और षांति से बातचीत करना चाहिए जिससे सामने वाले भी खुष हो जाएगें। जब ग्राहक आए तो प्रेम से बिठाए फिर काम की बात षुरू करें।

8. संयम– (अपने ऊपर काबू रखना) टेलर को कपड़े सिलने में जल्दबाजी नही करना चाहिए। जल्दबाजी करने से कपड़ा खराब हो जाएगा। कपड़ा ध्यान से और सफाई से सिलना चाहिए। जिससे ग्राहक आपके पास बार–बार आए। जब कोई ग्राहक कभी सिलाई की कोई गलती आकर बताता है, तो उससे लड़ना नहीं चाहिए। षांति व संयम से उनकी बातों को सुनना चाहिए। टेलर को अपने ऊपर काबू रखना चाहिए। उदाहरण के लिए जब किसी ग्राहक का कपड़ा खराब हो जाता है तब वह गुस्से में आकर कपड़े वापस लाकर दे देता है टेलर को भला–बुरा कहने लगता है उस समय टेलर को विनम्रता से बोलना चाहिए और प्यार से समझाना चाहिए और उन्हें कहें कि आपका कपड़ा फिर से बनाकर दे देगें। यदि कपड़ा तैयार होने के बाद ग्राहक कपड़े की कोई षिकायत लेकर आता है तो ध्यान से सुनिए और षिकायत को दूर करने की कोषिष करें।

9. काम की तैयारी– काम हमारे जीवन में बहुत महत्व रखता है। काम से हमारा स्वयं का व परिवार का विकास होता है। हमें जीवन में आगे बढ़ने में सहायता देता है और समाज में हमारी इज्जत बढ़ती है। जब हम कोई काम करते है तो सबसे पहले काम की तैयारी कर लेना चाहिए ताकि बार–बार उठने की जरूरत न हो। इसलिए एक टेलर को सिलाई करते समय तैयारी करके मषीन पर बैठना चाहिए।

10. सेवा की भावना– *“विष्व का उत्थान षुद्ध और अच्छे कर्मों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, प्रषंसनीय और अनुकरणीय आचरण से किया जा सकता है।”*

यानि हमें ऐसे काम करना चाहिए जो लोगों को भी अच्छे लगें और वे भी उन कामों को करना चाहें। इससे हमारा, हमारे परिवार का, गाँव तथा पूरी दुनिया का विकास हो सकता है। काम कैसा भी हो उस काम को और अच्छा करने के लिए सेवा की भावना होना जरूरी है। अतः टेलर को भी अपना काम सेवा की भावना से करना चाहिए। उसका उद्देष्य सिर्फ पैसा कमाना ही नही होना चाहिए बल्कि अपने ग्राहको को सही समय पर अच्छा कपड़ा सिलकर देना चाहिए।

11. मेहनती होना– मेहनती का मतलब है, ज्यादा से ज्यादा घंटे हों या ज्यादा से ज्यादा काम हो, उसे बिना बोझ समझे करने की आदत ही मेहनती होना है। उदाहरण – यदि दीपावली का समय है और सिलाई ज्यादा होती है तो उसे ज्यादा से ज्यादा काम करके समय पर कपड़े सिलकर देना चाहिए।

"प्रत्येक ऐसे कर्म करें जो षुद्ध और पवित्र हों, क्योंकि षब्द सबकी समान रूप से निधि है, जबकि ऐसे कर्म केवल हमारे प्रियजनों के हैं। अपनी आत्मा की पूरी षक्ति के साथ प्रयत्न करो कि तुम अपने कर्मों से जाने जाओ। यह सर्व महान की पाती के परामर्ष का सार है।"

12. सोच–विचार– सोच–विचार कर काम करने से हमारे अन्दर विष्वास व सही सोच का विकास होता है। हमें हमारी क्षमताओं का उपयोग करने में मदद मिलती है व आपसी सहयोग बढ़ता है। टेलर को कपड़ा काटते समय सोच विचार करना चाहिए। उसे यह सोचना चाहिए कि वह किस तरह से कपड़े को बनाएं जो दिखने में व पहनने में अच्छा हो। अतः उसे जल्दबाजी में काम नही करना चाहिए जिससे कपड़ा गलत भी सिल सकता है।

13. प्रसन्नता– जब हम काम करते हैं तो हमारा मन उदास और दुःखी नहीं होना चाहिए। इसका असर आने वाले ग्राहक पर होता है। हम जब भी काम करें तब सारी बाते भूलकर ग्राहक के साथ खुषी से बातें करें और उसके काम को प्रसन्न होकर करें।

"आनंद हमें पंख लगा देता है। आनंद के समय हमारी षक्ति अधिक बलषाली, हमारी बुद्धि अधिक तीक्ष्ण और हमारी सूझबूझ कम धुंधली होती है। इस संसार का सामना करने और अपनी उपयोगिता का क्षेत्र ढूंढ़ने में अपने आप को अधिक योग्य पाते हैं। परन्तु जब हम पर उदासी और खिन्नता छा जाती है तो हम दुर्बल हो जाते हैं, षक्ति हमारा साथ छोड़ देती है, हमारी सूझबूझ धुंधली हो जाती है और हमारे विवेक पर पर्दा पड़ जाता है। जीवन की वास्तविकताएं हमारी समझ से बाहर होती दिखाई पड़ती हैं, हमारी आत्माओं के चक्षु पवित्र रहस्यों का उद्घाटन करने में विफल हो जाते हैं और हम प्रायः मृत प्राणी बन जाते है।"

15. वर्तमान ज्ञान– किसी भी इंसान को काम में आगे बढ़ने के लिए करते समय वर्तमान ज्ञान की जरूरत होती है। जिसे वह विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं व पुस्तकों से पूर्ण कर सकते हैं।

ग्राहक के साथ व्यवहार

1. ग्राहक द्वारा लाया गया कपड़ा नाप कर देखें।
2. नाप लेते समय ग्राहक के बाजू में खड़े होकर नाप लें।
3. आर्डर बुक निकालकर ग्राहक का नाम, पता, उसके लाए हुए कपड़े की कतरन व आवष्यक नाप लिख लें।
4. ग्राहक को एक बार ट्राई के लिए बुला लीजिए।

बरली संस्थान से प्रषिक्षित सफल टेलर

हिरली सोलंकी

झाबुआ जिले की हिरली सोलंकी जो सन् 2001 में बरली संस्थान में प्रषिक्षण लेने आई थी। उसने संस्थान में रहते हुए स्वास्थ्य, बागवानी,, साक्षरता, व्यक्तित्व विकास, कटाई–सिलाई का प्रषिक्षण लिया। हिरली प्रषिक्षण पूरा कर घर गई। अपने परिवार की सहायता से एक सिलाई मषीन खरीदकर सिलाई करना षुरू किया। सिलाई से प्राप्त आय से उसने इंटरलॉक की मषीन खरीदी और अपनी दोनों मषीनों को वालपुर में अलग से कमरा लेकर सिलाई करके अपने परिवार का खर्च चला रही है। इससे उसका आत्मविष्वास बढ़ा है। प्रषिक्षण हमें जीवन में आगे बढ़ने में मदद व आर्थिक रूप से सषक्त करता है।

गरली और रोली

गाँव उमराली जिला झाबुआ की गरली व रोली ने बरली संस्थान से प्रषिक्षण लिया व सिलाई का काम षुरू किया। आज वे उस क्षेत्र के सफल टेलरों में गिनी जाती है। उन्होनें सिलाई करके 50,000/– रूपये जमाकर जमीन खरीदी। इस तरह उन्होंने अपने परिवार की मदद की व समुदाय के लिए एक उदाहरण बन गये।

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने जाना कि कटाई–सिलाई सीखना क्यों जरूरी है और छह महीने के प्रषिक्षण के दौरान हम कटाई–सिलाई में कौन–कौन से विषय सीखेंगे। हमने यह भी जाना और समझा कि एक सफल प्रषिक्षिका/ सहयोगी और सफल टेलर में कौन–कौन से गुण होने चाहिए। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोट : प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दें। जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

कल आपको संस्थान में बने कटाई–सिलाई के नमूने दिखाएंगे।

पाठ एक : सिलाई मषीन का परिचय

प्रषिक्षिका द्वारा पाठ का परिचय

– *पाठ के षुरुआत में पूछें*

''आपने कौन–कौन सी सिलाई मषीने देखी हैं?''

– *जिन प्रषिक्षणार्थियों ने सिलाई मषीन देखी हो, उनसे सिलाई मषीन का नाम पूछें।*

– *उनके द्वारा दिए गए उत्तरों पर अगर जरूरत हो तो चर्चा करें फिर कहें,*

सिलाई मषीन कई तरह की होती है। हाथ, पैर, बिजली की मोटर से चलने वाली, फैषन मेकर, एम्ब्रॉयडरी, स्ट्रीम लाइट, इंटर लॉक एवं कारखाने में काम आने वाली सिलाई मषीन। इन मषीनों से कई तरह की सिलाई की जाती है।

इस पाठ में हम अलग–अलग तरह की सिलाई मषीनों के बारे में जानेंगे व समझेंगे।

इस पाठ को हम एक–एक घंटे के 10 सत्रों में पूरा करेंगे।

उद्देष्य : इस पाठ के पूरा होने तक प्रषिक्षणार्थी इस योग्य हो जाएं कि वेः

* अलग–अलग तरह की सिलाई मषीनों के बारे में समझ सकें।
* सिलाई मषीन के पुर्जों के नाम व उनके काम को समझ सकें।
* सिलाई मषीन का उचित रख–रखाव करना सीख सकें।
* सिलाई मषीन में आई खराबियों/दोषों को समझकर ठीक कर सकें।
* जान सकें कि सिलाई मषीन पर काम करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

सत्र 1: हाथ, पैर और बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मषीनों का परिचय

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का परिचय

इस सत्र में हम हाथ, पैर और बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मषीनों के बारे में पढ़ेंगे और अंतर समझेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा षुरुआती चर्चा

– *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*

– *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उनकी बोली में समझाएं।*

सिलाई मषीन आज की दुनिया में कपड़े सिलने के लिए बहुत उपयोगी हो गई है। पुराने जमाने में सिलाई मषीन नहीं थी इसलिए कपड़ों की सिलाई हाथ से की जाती थी। हाथ से सिलाई करने में ज्यादा समय लगता था। सिलाई में सफाई भी नहीं आती थी। काम में सफाई तथा सिलाई जल्दी करने के लिए सिलाई मषीन का आविष्कार किया गया।

ऐलिस होप ने लकड़ी के पहिए का आविष्कार किया। सबसे पहले 1790 में लंदन के थॉमस सेंट ने पहिए (चक्के) का उपयोग किया। धीरे–धीरे बदलाव आता गया। नए–नए आविष्कारों के बाद श्री सिंगर ने लोहे की सिलाई मषीन बनाई उन्हीं के नाम पर सिलाई मषीन का नाम ''सिंगर'' रखा गया। इस तरह बहुत से नामों की सिलाई मषीनें बनाई गई हैं। सिलाई मषीन के उपयोग से समय की बचत के साथ–साथ सिलाई में सफाई भी आने लगी है।

''आवष्यकता आविष्कार की जननी है।'' यह कथन बिल्कुल सही है। अब सिलाई को एक व्यवसाय बना लिया गया है। इसी कारण कई तरह की स्वचलित और ऑटोमेटिक सिलाई मषीनों का आविष्कार किया गया। इन मषीनों से सिलाई का काम सुंदरता, सफाई से और ज्यादा कपड़े सिलने के लिए किया जाता है। सिलाई मषीनें कई तरह की होती हैं जैसे

1. हाथ से चलने वाली सिलाई मषीन
2. पैर से चलने वाली सिलाई मषीन

3. बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मषीन
4. फैषन मेकर सिलाई मषीन
5. कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी) करने वाली सिलाई मषीन
6. स्ट्रीम लाइट सिलाई मषीन
7. इंटर लॉक मषीन
8. कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीन

चरण 2: सहयोगी द्वारा हाथ से चलने वाली सिलाई मषीन की जानकारी

– *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें*

''क्या आपने हाथ से चलने वाली सिलाई मषीन देखी है?''

– *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें अगर जरूरत हो तो उनके द्वारा दिए गए उत्तरों पर चर्चा करें।*

– *प्रषिक्षणार्थियों को सिलाई मषीन के पास ले जाकर मषीन की जानकारी समझाएं।*

– *अगर सिलाई मषीन नहीं हो तो चित्र नं. 1 दिखाकर जानकारी समझाएं।*

प्रषिक्षिका के लिए नोटः हर समूह में जाकर देखें कि प्रषिक्षणार्थियों को मषीन की जानकारी अच्छी तरह से समझ में आ रही है या नहीं। अगर जरूरत महसूस हो तो आप प्रषिक्षणार्थियों को समझाएं।

हाथ से चलने वाली सिलाई मषीन– इस मषीन को हाथ से चलाया जाता है। इसको सरलता से कहीं भी उठाकर ले जा सकते हैं। इस सिलाई मषीन से हम कहीं पर भी बैठकर सिलाई कर सकते हैं। मषीन को चलाने के लिए छोटे फ्लाई व्हील में लगे हत्थे को हाथ से घुमाना पड़ता है जिससे फ्लाई व्हील घूमता है और मषीन चलती है। इसलिए इसे ज्यादा देर तक नहीं चलाया जा सकता है।

चित्र 1

हाथ से चलने वाली सिलाई मषीन

चरण 3: सहयोगी द्वारा पैर से चलने वाली सिलाई मषीन की जानकारी

– *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें*

''क्या आपने पैर से चलने वाली सिलाई मषीन देखी है?''

– *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें। अगर जरूरत हो तो उनके द्वारा दिए गए उत्तरों पर चर्चा करें।*

– *प्रषिक्षणार्थियों को सिलाई मषीन के पास ले जाकर अलग–अलग भाग की तरफ इषारा करते हुए नीचे लिखी जानकारी समझाएं।*

– *अगर सिलाई मषीन नहीं हो तो नीचे दिए गए चित्र नं. 2 दिखाकर जानकारी समझाएं।*

पैर से चलने वाली सिलाई मषीन– पैर से चलने वाली सिलाई मषीन में एक स्टैंड होता है जिसके ऊपर मषीन को रखा जाता है। इस मषीन में एक डोरी लगी होती है। इस डोरी (बद्दी) से छोटे फ्लाई व्हील को बड़े फ्लाई के साथ जोड़ दिया जाता है। मषीन को चलाने के लिए एक पायदान होता है जिस पर पैर रखकर दबाने से और छोटे फ्लाई व्हील को हाथ से घुमाने पर मषीन चलती है। यह मषीन हाथ से चलने वाली सिलाई मषीन से तेज चलती है। इसलिए इस मषीन से कम समय में ज्यादा कपड़े सिले जा सकते हैं।

चित्र 2

पैर से चलने वाली सिलाई मशीन

चरण 4: सहयोगी द्वारा बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मशीन की जानकारी

- *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें*

  ''क्या आप में से किसी ने बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मशीन देखी है?''
- *अगर हां तो वह कैसे चलती है।*
- *प्रषिक्षणाार्थियों के उत्तर सुनें।*
- *एक साधारण सिलाई मशीन और दूसरी बिजली की मोटर लगी सिलाई मशीन दिखाएं। इस सिलाई मशीन को दिखाते समय मोटर में लगे बिजली के तार को (प्लग लगा हुआ) बिजली के स्विच बोर्ड में लगाकर दिखाएं।*
- *अगर बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मशीन नहीं है तो चित्र नं. 3 दिखाकर समझाएं।*
- *अगर कोई प्रषिक्षणार्थी जवाब नहीं दें तो बिजली से चलने वाली सिलाई मशीन में लगी मोटर को दिखाएं और पूछें कि यह क्या है?*
- *प्रषिक्षणार्थियों को अपने जवाब देने में थोड़ा समय लग सकता है, उनसे पूछें कि,*

  ''पैर से चलने वाली सिलाई मशीन और बिजली से चलने वाली सिलाई मशीन में क्या अंतर होता है?''
- *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें।*
- *अगर उन्हें मालूम नहीं हो तो आप बताएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को नीचे दिए गए उदाहरण की मदद से समझाएं।*

हम कुएँ से बाल्टी को रस्सी से बाँधकर हाथ से खींचकर पानी निकालते हैं तो हम धीरे–धीरे पानी भर पाते हैं और मेहनत भी ज्यादा लगती है। यदि हम कुएँ में बिजली की मोटर लगाकर पानी खींचते हैं, तो पानी जल्दी भर पाते हैं। उसी तरह से हम सिलाई मशीन में मोटर लगाकर सिलाई का काम जल्दी कर सकते हैं।

बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मशीन– यह मशीन पैर व हाथ से चलने वाली सिलाई मशीन के जैसी ही होती है लेकिन इसे पायदान या हाथ से नहीं चलाते हैं। इसमें बिजली की मोटर लगी होती है। इस मशीन में छोटे फ्लाई व्हील से मोटर में डोरी (बद्दी)

चित्र 3

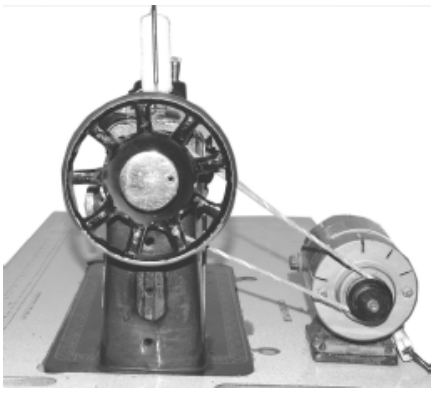

बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मशीन

लगा देते हैं। मोटर के तार को बिजली के प्लग में लगा देते हैं। बटन चालू करने के बाद पैर से दबाने या हाथ से दबाने के लिए एक रेग्युलेटर होता है। इसे दबाने से मोटर के फ्लाई व्हील के साथ मषीन भी तेजी से चलती है। मोटर लगाने से मषीन तेज चलती है जिससे सिलाई भी जल्दी होती हैं लेकिन इस मषीन पर सिलाई करने से पहले अधिक अभ्यास की आवष्यकता होती है।

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने हाथ, पैर और बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मषीनों के बारे में पढ़ा और अंतर समझा। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोटः प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दें जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम फैषन मेकर, कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी), स्ट्रीम लाइट, इंटर लॉक और कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीन के बारे में जानेंगे और अंतर समझेंगे।

सत्र 2: फैषन मेकर, कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी), स्ट्रीम लाईट, इंटर लॉक और कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीनों का परिचय

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने हाथ, पैर और बिजली की मोटर से चलने वाली सिलाई मषीनों के बारे में पढ़ा और अंतर समझा।

इस सत्र में हम फैषन मेकर, कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी), स्ट्रीम लाइट, इंटर लॉक और कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीन के बारे में पढ़ेंगे और अंतर समझेगें।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा फैषन मेकर सिलाई मषीन की जानकारी

- *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें*

  ''क्या आपने फैषन मेकर सिलाई मषीन देखी है?''
- *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें और कहें।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को नीचे लिखी जानकारी सिलाई मषीन के पास ले जाकर समझाएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को मषीन की कढ़ाई व पीको किए गए कपड़ों के एक या दो नमूने दिखाएं।*
- *अगर सिलाई मषीन नहीं हो तो नीचे दिए गए चित्र नं. 4 की मदद से जानकारी समझाएं।*

फैषन मेकर सिलाई मषीन– फैषन मेकर सिलाई मषीन से हम सादी सिलाई, कढ़ाई और पीको करते हैं। हमें इस मषीन के बारे में जानकारी होनी चाहिए। फैषन मेकर सिलाई मषीन से कपड़े सिलने के साथ–साथ कढ़ाई भी कर सकते हैं। कढ़ाई करने के लिए अलग–अलग डिजाइनों की 21 प्लेटें होती हैं। हर एक प्लेट को बदल कर लगाने से अलग डिजाइन बना सकते हैं। इस मषीन से साड़ी, दुपट्टा, पिलो कवर (तकिया का खोल) आदि पर पीको भी किया जाता है। कपड़े की किनार को मोड़ने का भी काम कर सकते हैं। दूसरी मषीनों की तरह इस मषीन में टाँकों को छोटा–बड़ा कर सकते हैं। इस मषीन को हम पैर से चला सकते हैं या इसमें बिजली की मोटर लगाकर भी चला सकते हैं। बिजली की मोटर लगाने से हम सिलाई और कढ़ाई का काम आसानी से कर सकते हैं।

चित्र 4

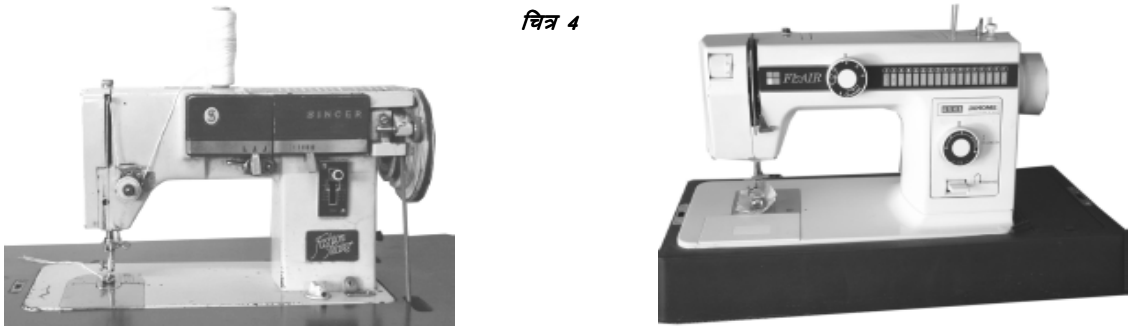

फैषन मेकर सिलाई मषीन

चरण 2: सहयोगी द्वारा कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी) करने वाली सिलाई मषीन की जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी किसी एक प्रषिक्षणार्थी को पढ़ने को कहें।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को कढ़ाई (एम्ब्रॉयड़री) की मषीन दिखाकर जानकारी समझाएं।*
- *अगर मषीन नहीं हो तो नीचे दिए गए चित्र नं. 5 को दिखाकर जानकारी समझाएं।*

कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी) करने वाली सिलाई मषीन– कढ़ाई करने वाली मषीन से कपड़े पर अलग–अलग डिजाइन की कढ़ाई कर सकते हैं जिससे कपड़ों की सुंदरता बढ़ जाती है। इस मषीन से साधारण सिलाई और पीको भी किया जाता है।

चित्र 5

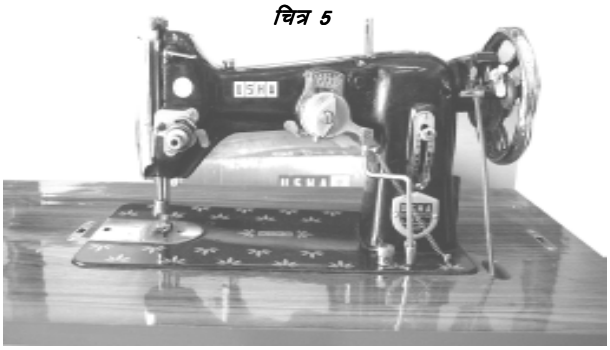

कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी) करने वाली सिलाई मषीन

चरण 3: सहयोगी द्वारा स्ट्रीम लाईट सिलाई मषीन की जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी पढ़ें और समझाएं।*

स्ट्रीम लाइट सिलाई मषीन– इस मषीन के ऊपर लाईट लगी होती है। जिससे कम उजाले वाली जगह मे भी पूरी मषीन पर उजाला होता है। इसलिए इससे सिलाई करने में आसानी होती है।

चरण 4: सहयोगी द्वारा इंटर लॉक मषीन की जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी किसी एक प्रषिक्षणार्थी को पढ़ने को कहें।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को इंटर लॉक मषीन दिखाकर जानकारी समझाएं।*
- *अगर इंटर लॉक मषीन नहीं हो तो नीचे लिखी जानकारी चित्र नं. 6 दिखाकर समझाएं।*

इंटर लॉक मषीन– यह मषीन छोटी होती है इस मषीन में तीन धागों की रील इकट्ठी चलती है। इसका फ्लाई व्हील छोटा होता है। इसका उपयोग कपड़े की सिलाई करने के बाद किनारों को बंद करने के लिए किया जाता है।

चित्र 6

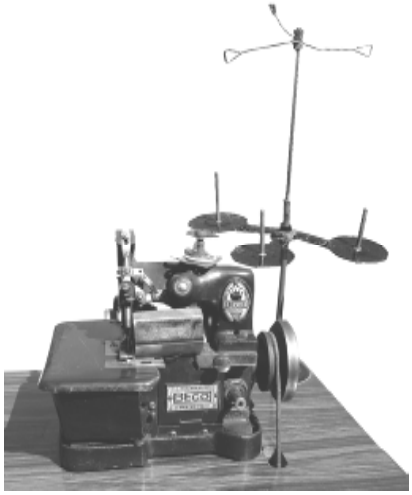

इंटर लॉक मषीन

चरण 5: सहयोगी द्वारा कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीन की जानकारी

- *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें*

  ''क्या आपने कभी कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीन देखी है?''
- *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें अगर जरूरत हो तो उनके उत्तरों पर चर्चा करें।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को नीचे लिखी जानकारी सिलाई मषीन के पास ले जाकर समझाएं।*
- *अगर मषीन नहीं हो तो नीचे दिए गए चित्र नं. 7 को दिखाकर समझाएं।*

कारखानों में काम आने वाली (अम्ब्रेला) सिलाई मषीन–यह मषीन साधारण सिलाई मषीन से बड़ी होती है। कपड़ों के कारखानों में ज्यादा कपड़े सिलने पड़ते हैं इसलिए कारखानों में बड़ी मषीन का उपयोग किया जाता है। इस मषीन का स्टैन्ड बड़ा होता है। कपड़े को लगाने और निकालने के लिए प्रेषर फुट (घोड़ा) को हाथ से नहीं उठाना पड़ता है। प्रेषर फुट को घुटने की मदद से उठाते हैं। इसलिए यह मषीन कम समय में ज्यादा कपड़े सिलने के काम आती है।

चित्र 7

कारखाने में काम आने वाली सिलाई मषीन

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने फैषन मेकर, एम्ब्रॉयडरी (कढ़ाई) करने वाली, स्ट्रीम लाईट, इंटर लॉक और कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीनों के बारे में पढ़ा और उनमें अंतर समझा। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोटः प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दे जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम सिलाई मषीन के पुर्जों के नाम व उनके उपयोग के बारे पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र 3: सिलाई मषीन के पुर्जे

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने फैषन मेकर, कढ़ाई (एम्ब्रॉयडरी) करने वाली, स्ट्रीम लाईट, इंटर लॉक और कारखानों में काम आने वाली सिलाई मषीनों के बारे में पढ़ा और अंतर समझा।

इस सत्र में हम सिलाई मषीन के ऊपर, अंदर, हत्थे और नीचे के भाग के पुर्जों के नाम व उनके उपयोग के बारे पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा षुरूआती चर्चा

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी से नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझ में नहीं आएं तो उन्हें समझाएं व चर्चा करवाएं।*

सिलाई मषीन के मुख्य भाग व उनके काम

जैसे इंसान के षरीर की रचना छोटी–बड़ी कई हड्डियों से बनी है उसी तरह मषीन भी छोटे–छोटे पुर्जों से बनी है। मषीन के पुर्जों के नाम भी रखे गए हैं। सिलाई मषीन को पाँच भागों में बाँटा गया है : आगे का भाग, मध्य भाग, हत्थी वाला भाग, अंदर का भाग और नीचे का भाग। इसकी जानकारी आगे दी गई है।

चरण 2: सहयोगी द्वारा सिलाई मशीन के मुख्य भागों के पुर्जों के नाम व जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को पुर्जों के नाम पढ़ने को कहें।*
- *अगर प्रषिक्षणार्थियों को पढ़ना नहीं आएं तो आप उनकी मदद करें।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को दो–दो की जोड़ी में पुर्जों के नाम याद करने के लिए 10 मिनिट का समय दें।*
- *जब प्रषिक्षणार्थियों को पुर्जों के नाम याद हो जाएं तो एक–एक कर सभी प्रषिक्षणार्थियों से पुर्जों के नाम सुनें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को पुर्जों के नाम नहीं आ रहे तो उन्हें फिर से समझाएं।*

चित्र 8

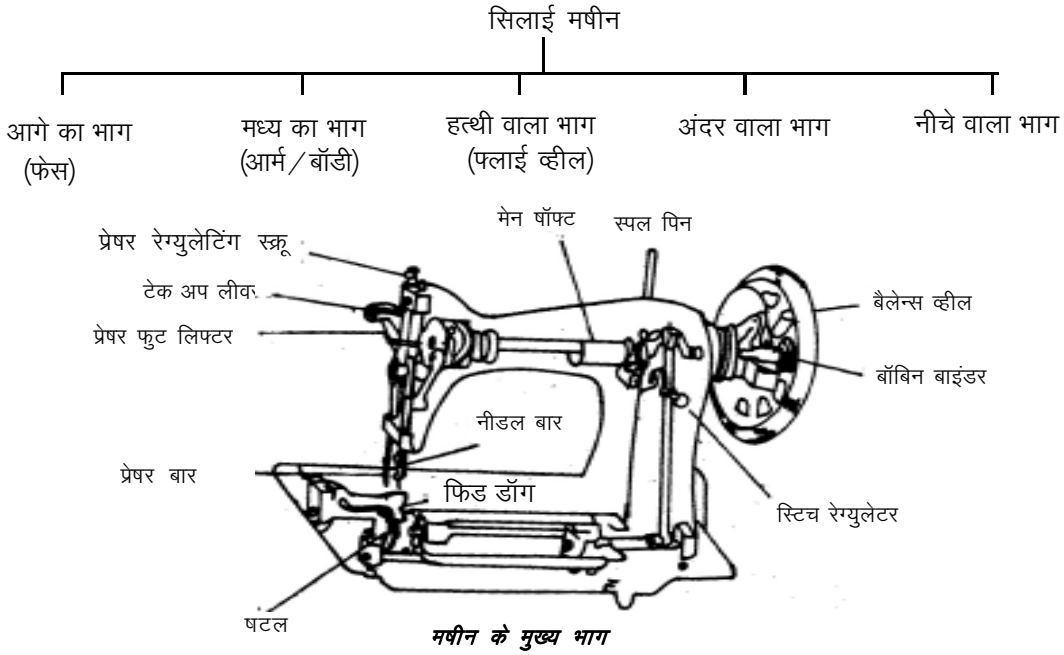

मषीन के मुख्य भाग

आगे के भाग के पुर्जे

1. प्रेषर बार
2. प्रेषर फुट
3. प्रेषर फुट लिफ्टर (घोड़ा)
4. नीडल बार (सुई का गज)
5. क्लेम्प स्क्रू (चुटकी)
6. थ्रेड टेन्षन डिवाइस (थालिया)
7. टेक अप लीवर (लबलबी)
8. नीडल प्लेट (चांद)
9. फीड डॉग (दंदराल/दॉती)
10. स्लाइड प्लेट
11. थ्रेड गाइड
12. प्रेषर रेग्युलेटिंग स्क्रू

मध्य भाग के पुर्जे

1. स्पूल पिन
2. बॉबिन वाइंडर
3. स्टिच रेग्युलेटर

हत्थी वाले भाग के पुर्जे

1. स्टॉप (मोषन) स्क्रू
2. छोटा फ्लाई व्हील
3. ब्रैकट स्क्रू

नोट : प्रषिक्षिका हर समूह में जाकर देखें कि सहयोगी ठीक से बता रही हैं या नहीं

चरण 3: सहयोगी द्वारा सिलाई मषीन के अंदर व नीचे के पुर्जों के नाम व जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को पुर्जे के नाम पढ़ने को कहें।*
- *सभी प्रषिक्षणार्थियों को सिलाई मषीन के पुर्जों की तरफ इषारा करते हुए उंगली रखकर पुर्जे दिखाएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को दो–दो की जोड़ी में पुर्जों के नाम याद करने के लिए लगभग 10 मिनिट का समय दें।*
- *हर एक प्रषिक्षणार्थी से पुर्जों के नाम पूछें।*
- *अगर उन्हें पुर्जों के नाम याद नहीं हो तो फिर से दोहराव करवाएं।*

अन्दर (भीतर) के भाग के पुर्जे

1. बॉबिन (फिरकनी)
2. बॉबिन केस (डिब्बी)
3. षटल
4. षटल ड्राइवर
5. रेस बॉडी

नीचे के भाग के पुर्जे

1. पायदान
2. बड़ा फ्लाई व्हील

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने सिलाई मषीन के आगे, मध्य, हत्थे, अंदर और नीचे के भाग के पुर्जों के नाम पढ़ें। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोटः प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दें जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम सिलाई मषीन के आगे के भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ेंगे व समझेगें।

सत्र 4: सिलाई मषीन के आगे के भाग के पुर्जों के उपयोग

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने सिलाई मषीन के आगे, मध्य, हत्थे, अंदर और नीचे के भाग के पुर्जों के नाम पढ़ें।

इस सत्र में हम सिलाई मषीन के आगे के भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा सिलाई मशीन के आगे के भाग के पुर्जों के नाम व उनके काम की जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी को पढ़ते जाएं व चित्र की मदद से समझाते जाएं।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी ठीक तरह से समझ में नहीं आई हो तो उसे सिलाई मषीन के पास ले जाकर पुर्जे दिखाएं व समझाएं।*

आगे के भाग के पुर्जे

प्रेषर बार– यह एक डंडा होता है जिसमें प्रेषर फुट लगा होता है। यह नीडल बार के पास में होता है।

चित्र 9

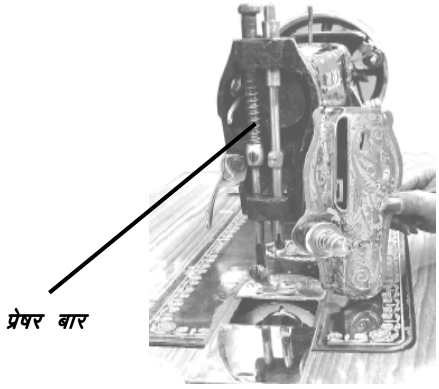

प्रेषर फुट– यह प्रेषर बार में लगा होता हैं। यह पैर जैसा होता है। यह कपड़े पर दबाव डालता है। प्रेषर फुट कई प्रकार के होते हैं।

चित्र 10

चेन लगाने का प्रेषर फुट

पीको करने वाला प्रेषर फुट

साधारण सिलाई मषीन का प्रेषर फुट

कढ़ाई करने वाली सिलाई मषीन का प्रेषर फुट

प्रेषर फुट लिफ्टर (घोड़ा)– इसे घोड़ा भी कहते हैं। यह प्रेषर फुट को ऊपर–नीचे करने के काम में आता है। मषीन में कपड़ा लगाते समय पहले इसे ऊपर उठाते हैं फिर बाद में इसे नीचे करते हैं।

चित्र 11

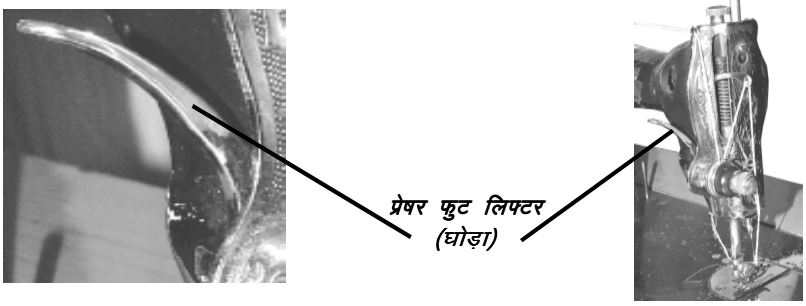

नीडल बार (सुई का गज)– इसमें नीचे की तरफ सुई लगाई जाती है। मषीन चलने पर यह ऊपर नीचे होता है। जिससे सुई ऊपर नीचे होती है और बखिया आता है।

चित्र 12

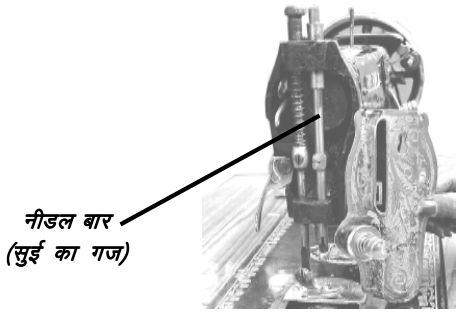

क्लेम्प स्क्रू (चुटकी)– इसकी मदद से सुई को नीडल बार में लगाते हैं। इसमें एक पेंच होता है, जिसे कसने से सुई लग जाती है।

चित्र 13

क्लेम्प स्क्रू (चुटकी)

थ्रेड टेन्षन डिवाइस– इसे थालिया भी कहते हैं। इसके बीच में से धागा निकाला जाता है। यह धागे के कसाव को सही रखता है।

चित्र 14

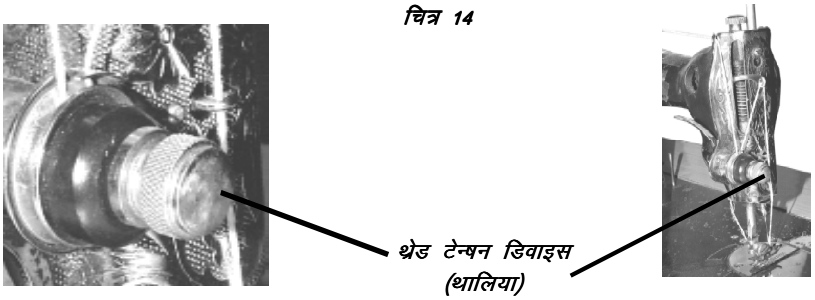

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने सिलाई मषीन के आगे के भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ा व समझा। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोटः प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दे जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम सिलाई मषीन के मध्य, अंदर, नीचे और हत्थी वाले भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र 5: सिलाई मषीन के मध्य, अंदर, नीचे और हत्थी वाले भाग के पुर्जों के उपयोग

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने आगे के भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ा व समझा।

इस सत्र में हम सिलाई मषीन के मध्य, अंदर, नीचे और हत्थी वाले भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा पुर्जों के नाम व उपयोग की जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी को पढ़ते व चित्रों की मदद से समझाते जाएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों से पूछें कि उनको समझ में आया हैं या नहीं। अगर ठीक से समझ में नहीं आया हो तो उनको सिलाई मषीन के पास ले जाकर पुर्जे दिखाएं व समझाएं।*

टेक अप लीवर– इसको लबलबी भी कहते हैं। यह रील से धागा खींचकर सुई तक पहुंचाता है और धागे को सही दिषा दिखाता है।

चित्र 15

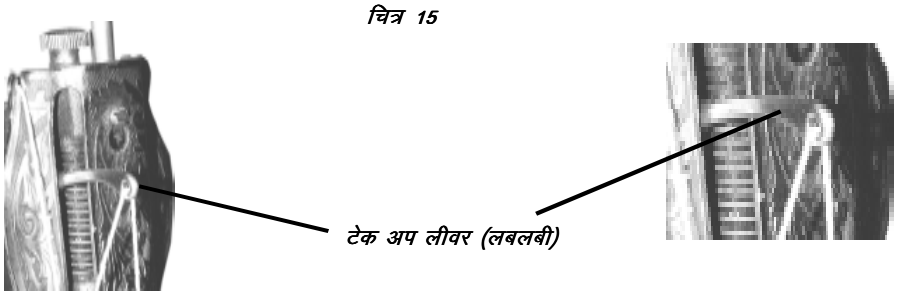

नीडल प्लेट (चाँद)– यह लोहे का होता है और आधे चाँद जैसा दिखता है। इसमें फीड डॉग ऊपर से दिखता है। इसमें एक छेद होता हैं, जिसमें से सुई नीचे जाती हैं।

चित्र 16

नीडल प्लेट

फीड डॉग (दंदराल)– इसको दाँती भी कहते हैं। यह दांतेदार होता है। सिलाई मषीन चलाने पर यह कपड़े को आगे सरकाता है।

चित्र 17

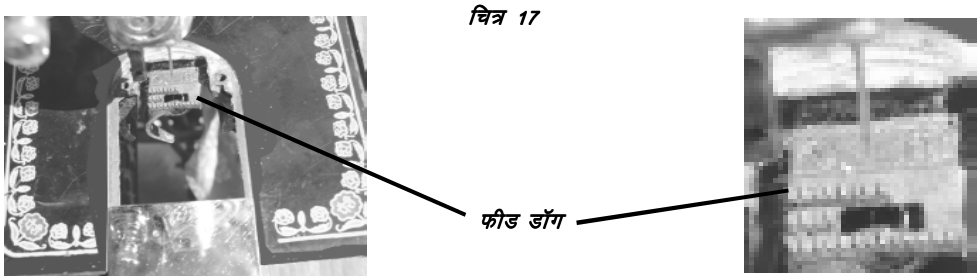

स्लाइड प्लेट– यह लोहे की प्लेट होती है। यह चौकोर आकार की होती है। इसको सरकाकर मषीन में बॉबिन केस लगाते हैं।

चित्र 18

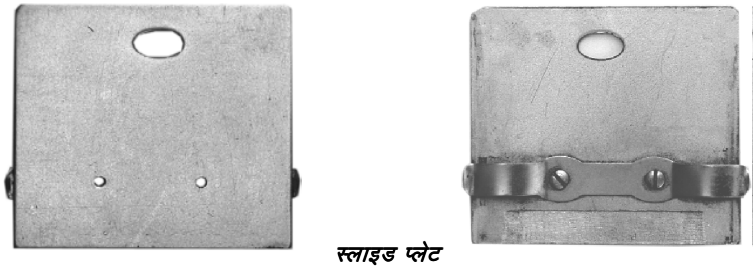

स्लाइड प्लेट

थ्रेड गाइड– सुई में धागा डालने से पहले इसमें धागा डालते हैं। यह धागे को सुई तक पहुंचाने का रास्ता दिखाता है।

चित्र 19

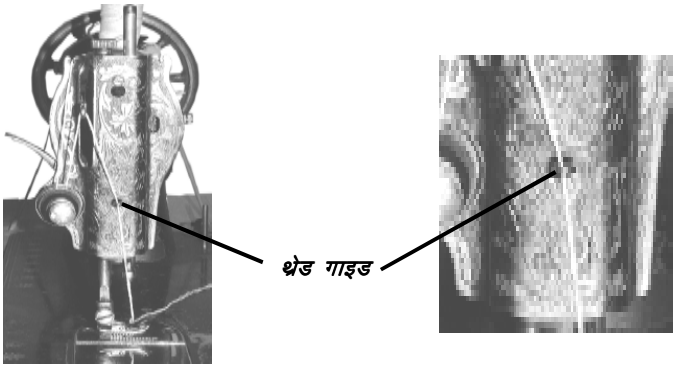

प्रेषर रेग्युलेटिंग स्क्रू– इस पेंच से प्रेषर फुट के दबाव को कम–ज्यादा कर सकते हैं।

चित्र 20

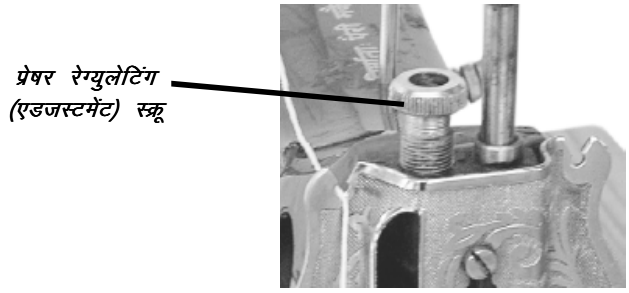

मध्य भाग के पुर्जे

स्पूल पिन–मशीन के ऊपर दो से तीन स्पूल पिन होती है। इसमें धागे की रील लगाते हैं, यह लोहे की कील 2–3 इंच लम्बी होती है।

चित्र 21

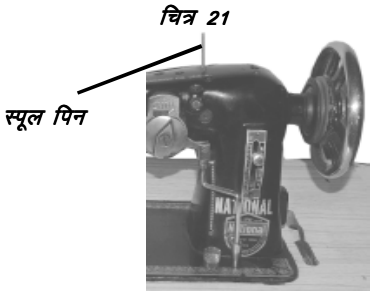

बॉबिन वाइंडर– यह बॉबिन भरने के काम में आता है। यह छोटे फ्लाई व्हील के पास में होता है। इसमें एक छोटा–सा पहिया होता है। जिस पर रबर लगा होता है। इसमें बॉबिन लगाकर पत्ती दबाने से बॉबिन में धागा भरा जाता है।

चित्र 22

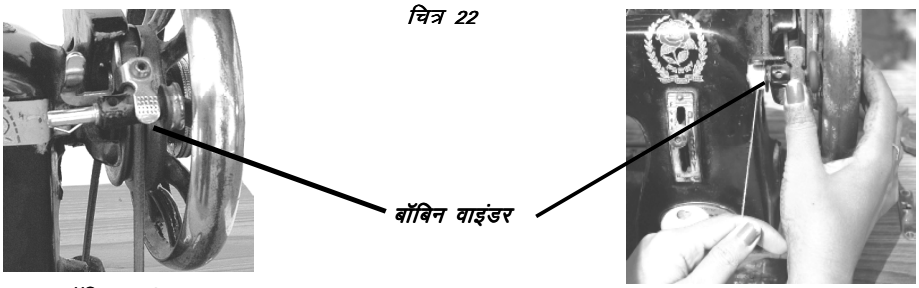

बॉबिन वाइंडर *बॉबिन में धागा भरना*

स्टिच रेग्युलेटर– यह एक पेंच होता है जिससे टाँके को छोटा–बड़ा कर सकते है। इसमें एक स्केल होता है जिस पर नंबर लिखे होते हैं। पेंच को पाँच नंबर पर रखने से बड़े टाँके आते हैं। पेंच को 0 पर रखने से मषीन चलना बंद हो जाती है। पेंच को 0 नंबर से नीचे रखने पर मषीन उल्टी चलने लगती है।

चित्र 23

स्टिच रेग्युलेटर

हत्थी वाले भाग के पुर्जे

स्टॉप (मोषन) स्क्रू – यह छोटे फ्लाई व्हील के बीच वाले हिस्से में होता है। इसको ढ़ीला करने से मषीन चलना बंद हो जाती है।

चित्र 24

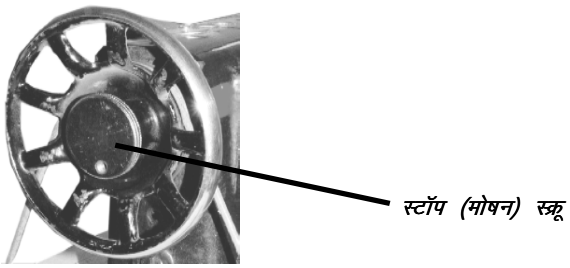

छोटा फ्लाई व्हील– मषीन में सीधे हाथ की तरफ जो पहिया लगा होता है जिसे घुमाने से मषीन चलती है उसे छोटा फ्लाई व्हील कहते हैं। मषीन चलाने से पहले फ्लाई व्हील को अपनी ओर घुमाकर सिलाई षुरू करनी चाहिए। इससे धागा मषीन में फंसता नहीं है।

चित्र 25

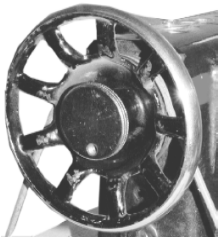

फ्लाई (बैलेन्स) व्हील

ब्रैकट स्क्रू– यह हाथ की मषीन में फिट होता है। इसका एक सिरा छोटे पहिए के साथ व दूसरा सिरा हत्थी के साथ जुड़ा होता है।

चित्र 26

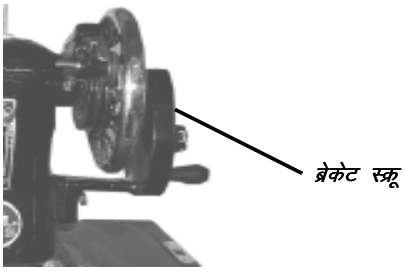

चरण 2: सहयोगी द्वारा सिलाई मशीन के अंदर व नीचे के भाग के पुर्जों के नाम व उपयोग की जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी को पढ़ते व चित्र की मदद से समझाते जाएं।*
- *अगर प्रषिक्षणार्थियों को जानकारी समझ में नहीं आई हो तो उनको सिलाई मषीन के पास ले जाकर पुर्जे दिखाएं व समझाएं।*

बॉबिन– इसको फिरकनी भी कहते हैं यह गोल होती है। इसमें धागा भरा जाता है। इसको बॉबिन केस में डालकर मषीन में लगाते हैं।

चित्र 27

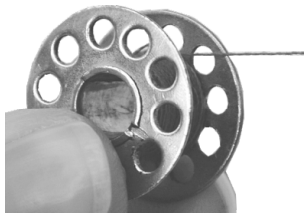

बॉबिन (फिरकनी)

बॉबिन केस– इसको डिब्बी भी कहते हैं। इसके अंदर फिरकनी डालकर षटल में लगाते हैं।

चित्र 28

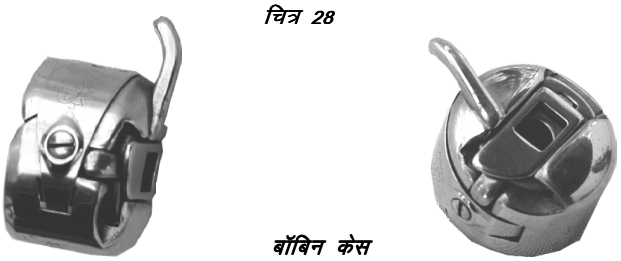

बॉबिन केस

षटल– यह आधे चॉद जैसा होता है, इसके ऊपर एक पत्ती (स्प्रिंग) चढ़ी होती है। यह षटल को चलाता है। इसके अंदर एक कील होती है, जिसमें बॉबिन केस (डिब्बी) लगाते हैं।

चित्र 29

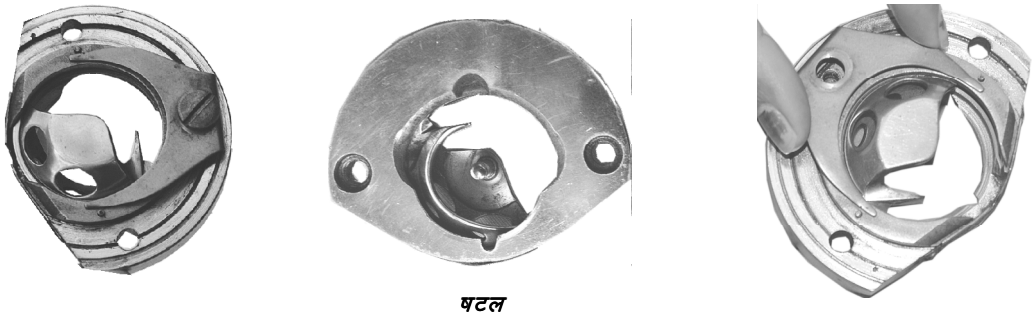

षटल

षटल ड्राइवर– मषीन के निचले हिस्से के मुख्य भाग में एक षॉफ्ट (लोहे का रॉड) होता है, जिसमें एक आधे चॉंद जैसा पुर्जा होता है। इसे षटल ड्राइवर कहते हैं।

चित्र 30

षटल ड्राइवर

रेस बॉडी– मशीन के निचले भाग में एक पुर्जा होता है इसे रेस बॉडी कहते हैं। इसके ऊपर षटल को रखकर दो पेचों से कस दिया जाता है।

चित्र 31

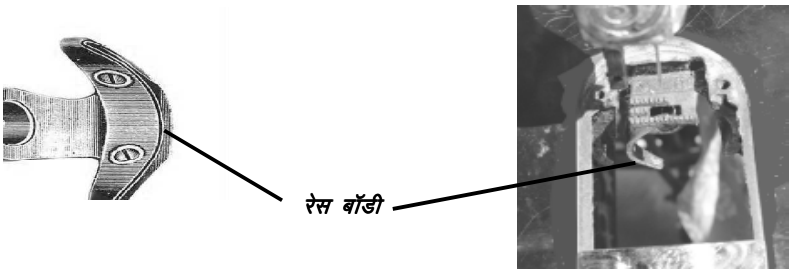

नीचे के भाग के पुर्जे

पायदान– यह पैर से चलने वाली सिलाई मशीन को चलाने के काम में आता है। यह लोहे का होता है। यह बड़े फ्लाई व्हील से जुड़ा होता है, इसको पैर से दबाने पर मशीन चलती है।

चित्र 32

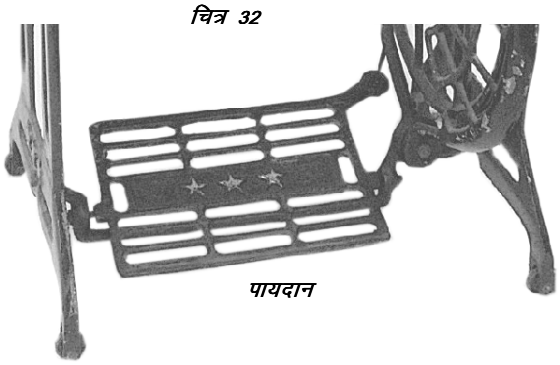

पायदान

बड़ा फ्लाई व्हील– पैर से चलने वाली सिलाई मशीन में एक बड़ा पहिया होता है। जिसको बड़ा फ्लाई व्हील कहते हैं। यह छोटे फ्लाई व्हील के साथ एक डोरी (बद्दी) से जुड़ा होता है। पायदान को दबाने से बड़ा फ्लाई व्हील घूमता है जिसके कारण छोटा फ्लाई व्हील भी घूमता है और मशीन चलती है।

चित्र 33

बड़ा फ्लाई व्हील

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने सिलाई मषीन के मध्य, अंदर, नीचे और हत्थी वाले भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ा व समझा। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोटः प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों के उत्तर दें जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम सिलाई मषीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातें पढ़ेंगे और समझेंगे।

सत्र 6: सिलाई मशीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातें

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने सिलाई मशीन के मध्य, अंदर, नीचे और हत्थी वाले भाग के पुर्जों के उपयोग के बारे में पढ़ा व समझा।

इस सत्र में हम सिलाई मशीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातें पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा सिलाई मशीन के उपयोग पर जानकारी

- *नीचे दी गई जानकारी किसी एक प्रषिक्षणार्थी को पढ़ने के लिए कहें,*
- *आप जानकारी को समझाएं।*

सिलाई मशीन का उपयोग

किसी भी काम को सही ढंग से करने के लिए कई नियमों का पालन करना आवष्यक है। सिलाई मशीन को चलाने से पहले, सिलाई करने की पूरी जानकारी होनी चाहिए तभी सिलाई का काम सही व सुचारु ढंग से किया जा सकता है। सिलाई की षुरुआत में कपड़े का एक सिरा मशीन के प्रेषर फुट के नीचे रखने के बाद छोटे फ्लाई व्हील को अपने सामने की तरफ धीरे–धीरे घुमाएं। कपड़े को बाएं हाथ से पकड़ कर रखें।

चरण 2: सहयोगी द्वारा मषीन में सुई लगाने और सुई में धागा डालने की जानकारी

- *प्रषिक्षणार्थियों को मषीन के पास ले जाकर नीचे लिखी जानकारी पढ़ते व समझाते जाएं।*
- *प्रषिक्षिणार्थियों से पूछें*

  ''क्या आप में से किसी को मषीन में सुई लगाना और धागा डालना आता है?''
- *प्रषिक्षणार्थियों के उत्तर सुनें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को मषीन में सुई लगाना और सुई में धागा डालना आता हो तो उन्हें सिलाई मषीन में सुई लगाकर व धागा डालकर दिखाने को कहें।*
- *प्रषिक्षणार्थी द्वारा मषीन में लगाई गई सुई और उसमें डालें गए धागे की जांच करें।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को सिलाई मषीन में सुई लगाने व धागा डालने का सही तरीका बताएं।*
- *आप सभी प्रषिक्षणार्थियों को मषीन में सुई लगाने व धागा डालने का सही तरीका तब तक बताएं जब तक कि उन्हें पूरी तरह से सुई लगाना व धागा डालना न आ जाए।*

सुई लगाना

1. नीडल बार (सुई का गज) को पूरी ऊंचाई तक उठाएं।
2. चुटकी (क्लेम्प स्क्रू) के पेंच को ढीला करें।
3. सुई को बाएं हाथ से पकड़कर सुई के चपटे भाग को नीडल बार के अंदर की तरफ करके लगाएं। सुई को क्लेम्प स्क्रू के ऊपर एक छोटा स्क्रू होता है वहां तक सुई ऊपर करके स्क्रू को कस दें।
4. चुटकी (क्लेम्प स्क्रू) के पेंच को अच्छी तरह कस दें।

चित्र 34

मषीन में सुई लगाना

सुई में धागा डालना

1. पहले मषीन के छोटे फ्लाई व्हील (पहिए) को अपनी तरफ घुमाएं जिससे धागा उठाने वाली लबलबी ऊपर आ जाए।
2. धागे की रील को मषीन के ऊपर स्पूल पिन में लगाएं।
3. धागे को ऊपर से लाते हुए थ्रेड टेन्षन डिवाइस (टेन्षन थालियां) के बीच में धागा फंसाने के बाद धागा टेक अप लीवर (लबलबी) के छेद में डालने के बाद थ्रेड गाइड (हुक) में डालें।
4. बाएं हाथ की तरफ से सुई में धागा डालें।
5. ऊपर व नीचे के धागे का तीन या चार इंच लम्बा सिरा छोड़ दें।

चित्र 35

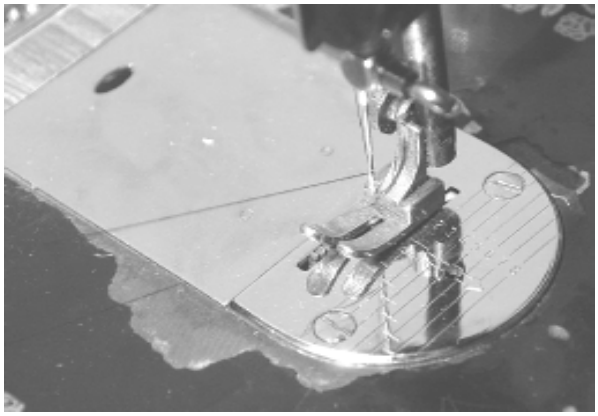

सुई में धागा डालना

बॉबिन (फिरकी) में धागा भरना

1. स्टॉप स्क्रू को ढीला करें।
2. धागे की रील को स्पूल पिन में लगा दें।
3. बॉबिन (फिरकी) में थोड़ा धागा हाथ से लपेट कर बॉबिन वाइंडर में फिट करें।
4. रबड़ के पहिए को दबाकर फ्लाई व्हील से जोड़ दें।
5. मषीन चलते ही बॉबिन (फिरकी) घूमने लगेगी और धागा उसमें लिपट जाएगा।

चित्र 36

बॉबिन में धागा लपेटना

बॉबिन (फिरकी) को डिब्बी (बॉबिन केस) में डालना

1. बॉबिन (फिरकी) को बॉबिन केस (डिब्बी) में इस तरह रखें कि धागे का सिरा अपनी तरफ रहे।
2. धागा बॉबिन केस (डिब्बी) के कटे हुए भाग से लगभग तीन इंच बाहर निकाल दें।
3. बॉबिन केस (डिब्बी) की पत्ती को उठाकर नीचे मषीन में लगे षटल पिन में लगाकर पत्ती को छोड़ दें।
4. बॉबिन (फिरकी) जब षटल में सही तरह लग जाती है तो 'टक' की आवाज आती है।

चित्र 37

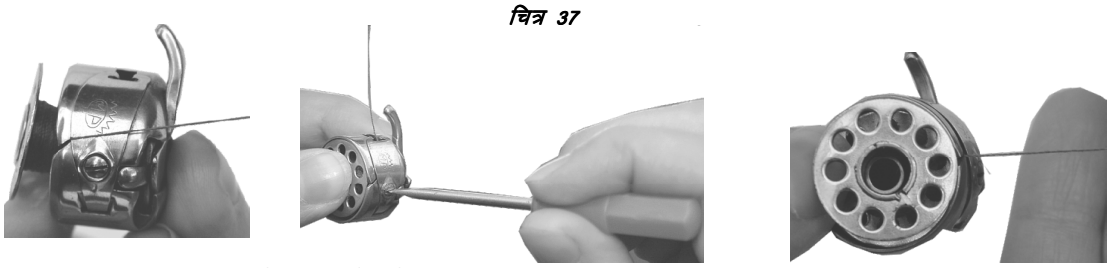

बॉबिन को बॉबिन केस में डालना

बॉबिन (फिरकी) के धागे को नीचे से ऊपर लाना

1. सुई में डाले गए धागे के सिरे को बाएं हाथ से पकड़ें।
2. छोटे फ्लाई व्हील को धीरे–धीरे अपनी ओर घुमाएं।
3. सुई को नीचे जाने दें तथा हाथ से धागे को पकड़कर रखें उससे धागा अपने आप ऊपर आ जाएगा।
4. धागे के दोनों सिरों को प्रेषर फुट के नीचे से पीछे की ओर कर दें।

सिलाई षुरू करना

1. पहले धागा नीचे से ऊपर करें।
2. कपड़े के जिस भाग की सिलाई करनी हो उसे प्रेषर फुट के नीचे दबाएं। कपड़े के एक किनारे को सीधे हाथ की तरफ रखें।
3. मषीन के छोटे फ्लाई व्हील को घुमाकर सिलाई षुरु करें। कपड़े को बाएं हाथ से धीरे–धीरे खिसकाएं।
4. सिलाई खतम करने के बाद 2 इंच धागा छोड़कर काटें।

चित्र 38

सिलाई षुरू करना *कपड़े की सिलाई करना* *सिलाई के बाद धागा काटना*

चरण 3: सहयोगी द्वारा सिलाई मषीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातों पर चर्चा

- *नीचे लिखी जानकारी किसी एक प्रषिक्षणार्थी को पढ़ने को कहें।*
- *जानकारी को उदाहरण की मदद से समझाएं।*

सिलाई मषीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातें

1. मषीन को अंदर–बाहर से अच्छी तरह साफ करना चाहिए।
2. सुई कपड़े के हिसाब से होनी चाहिए।
3. सुई को सही तरह से मषीन में लगाना चाहिए।
4. धागा कपड़े के हिसाब से होना चाहिए।
5. ऊपर–नीचे के धागे का खिंचाव एक जैसा होना चाहिए।
6. सिलाई करते समय झुककर नहीं बैठना चाहिए।
7. सिलाई मषीन के बाएं तरफ उजाला होना चाहिए।
8. ऊपर–नीचे का धागा 10 से 12 से.मी. बाहर निकला होना चाहिए।
9. सिलाई करने से पहले कपड़े के सभी भाग काट कर रख लेने चाहिए ताकि बार–बार उठना न पड़े।
10. सिलने से पहले कपड़े के उल्टी तरफ निषान लगा लेने चाहिए।
11. कपड़े को काटने से पहले प्रेस करके उसके सल मिटा लेने चाहिए फिर ड्रॉफ्ट बनाकर कटिंग करनी चाहिए।
12. कपड़े का अधिक भाग मषीन के बाहर बाएं तरफ होना चाहिए।
13. सिलाई करते समय कपड़े को पीछे से नहीं खींचना चाहिए। इससे सिलाई टेढ़ी हो जाती है।
14. सिलते समय कपड़े को सुई से लगभग 8 से.मी. की दूरी से पकड़ना चाहिए।
15. गरम व प्रिंटिड कपड़ों पर पहले कच्ची सिलाई करें उसके बाद पक्की सिलाई करनी चाहिए।
16. सिलाई षुरू व खतम करते समय थोड़ी दूर तक सिलाई को पक्का कर लेना चाहिए।
17. सिलाई खतम होने पर प्रेषर फुट को उठाकर धागे को थोड़ा सा खींचकर कपड़ा बाहर निकालने के बाद कम से कम 8 से.मी. धागा छोडकर काटना चाहिए।
18. धागे में गठान नहीं होनी चाहिए।
19. अगर हाथ की मषीन का उपयोग करना हो तो मषीन लगभग 30 से.मी. की ऊंचाई पर होनी चाहिए।
20. जाली, जारजट आदि बारीक कपड़े सिलते समय उनके नीचे पतला कागज लगा लेना चाहिए व बाद में कागज फाड़ देना चाहिए क्योंकि इससे सिलाई अच्छी आती है।
21. खाकी या उसी तरह के मोटे कपड़ों पर सिलाई करने से पहले उन्हें साबुन के पानी में भिगो देना चाहिए। मोम या साबुन को सिलाई वाली जगह पर लगाना चाहिए। इससे सिलाई आसानी से लग जाती है।
22. बॉबिन केस को षटल में लगाते समय 'टक' की आवाज आनी चाहिए।
23. जब ऐसे दो कपड़ो को एक साथ सिलना हो जिनमें एक का किनारा उरेब हो और दूसरे का सीधा हो तो उरेब कपड़े को ऊपर रखकर पहले कच्चा करना चाहिए ताकि कपड़ा सरक न जाएं।
24. सिलाई मषीन पर काम करते समय स्टूल की ऊंचाई इतनी होनी चाहिए जिससे पैर पायदान पर आसानी से पहुंच सकें।

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने सिलाई मषीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातों के बारे में पढ़ा व समझा। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोटः प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दे जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम सिलाई मषीन की साफ–सफाई, तेल देना और मषीन का रख–रखाव के बारे में पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र 7: सिलाई मषीन की साफ–सफाई, तेल देना और मषीन का रखरखाव

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने सिलाई मषीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातों के बारे में पढ़ा व समझा।

इस सत्र में हम सिलाई मषीन की साफ–सफाई, तेल देना और मषीन का रखरखाव के बारे में पढ़ेंगे व समझेगें।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा सिलाई मषीन की साफ–सफाई पर जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी पढ़ें और समझाएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को तब तक समझाएं जब तक कि जानकारी समझ में न आ जाए।*
- *चरण के अंत में एक बार दोहराव करवाएं।*

नीचे लिखे कथन को पढ़ें और समझाएं –

''बाहरी पवित्रता यद्यपि एक षारीरिक वस्तु है परन्तु आध्यात्मिकता पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है – निर्मल और पवित्र देह का गुण मनुष्य की आत्मा पर भी प्रभाव डालता है।''

हमारा षरीर और हमारी आत्मा एक दूसरे से जुड़े हैं। इसलिए हमारे षरीर के स्वास्थ्य का हमारी आत्मा के स्वास्थ्य पर गहरा असर होता है। अपनी आत्मा को स्वस्थ रखने के लिए हमें अपने षरीर को साफ रखना जरूरी है। सिलाई मषीन को लम्बे समय तक सुचारू ढंग से चलाने के लिए सफाई और देखभाल की जरूरत होती है। जिससे सिलाई मषीन ज्यादा दिनों तक अच्छी तरह से काम करती है। सिलाई करते समय हमें मषीन के रख–रखाव व उसे साफ रखने की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

सिलाई मषीन की साफ–सफाई

सिलाई मषीन को ब्रष या मुलायम कपड़े से साफ करना चाहिए। ब्रष से साफ करने के बाद मुलायम कपड़े से धूल, मिट्टी, आदि साफ करना चाहिए। मषीन की सफाई दो तरह से की जाती है। बाहर से साफ करना, अंदर से साफ करना।

1. बाहर से साफ करना

सिलाई करने से पहले मषीन को मुलायम कपड़े से अच्छी तरह पोंछ लेना चाहिए। इससे बाहर का कचरा मषीन के अंदर नहीं जाएगा। मषीन पर सिलने वाला कपड़ा भी गंदा नहीं होगा।

2. अंदर से साफ करना

मषीन को चलाने पर छोटे–छोटे धागे और रेषे मषीन के षटल और दंदराल (फीड डॉग) में फंस जाते हैं। जिससे मषीन भारी चलती है और आवाज भी करती है। कभी–कभी मषीन रूक–रूक कर चलती है। इसलिए मषीन का षटल खोलकर और दंदराल (फीड डॉग) अंदर से साफ करना चाहिए। इसी तरह फेस प्लेट में धूल और तेल जम जाता है इसलिए फेस प्लेट को खोलकर साफ करना चाहिए।

(2.1) षटल को साफ करना

षटल को खोलकर षटल में फंसे रेषे और कचरे को ब्रष से साफ करना चाहिए फिर उसे कपड़े से पोंछ कर मषीन में लगाना चाहिए।

चित्र 39

षटल को खोलकर साफ करना

(2.2) फेस प्लेट (सामने की प्लेट)

मषीन की फेस प्लेट को खोलकर अंदर वाले भाग को कपड़े से साफ करके तेल देना चाहिए।

चित्र 40

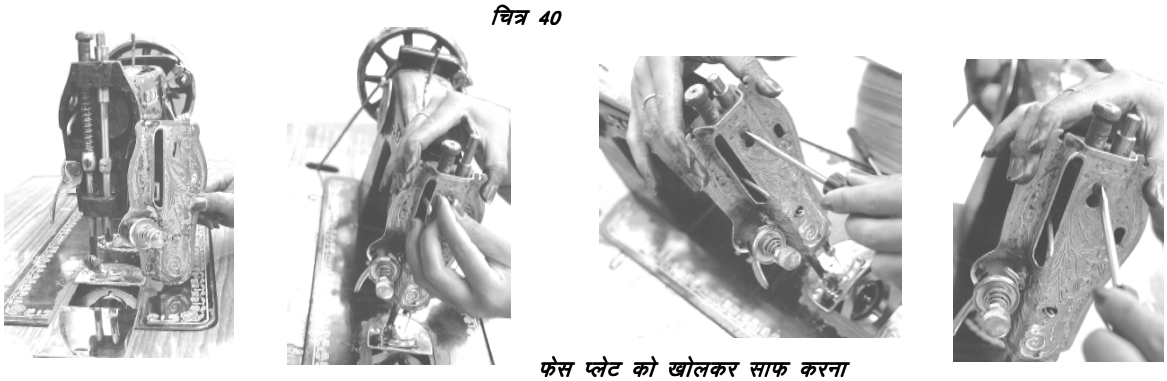

फेस प्लेट को खोलकर साफ करना

(2.3) फीड डॉग को साफ करना (दंदराल)

नीडल प्लेट पर लगे पेंचो को खोलकर दाँतो में फंसे रेषे, धागे अथवा मिट्टी आदि को भी अच्छी तरह से साफ करना चाहिए। फिड डॉग को खोलकर उसमें फंसा कचरा निकालना चाहिए। नीडल प्लेट के पेंच को खोलकर फीड डॉग को बाहर निकाल सकते हैं।

चित्र 41

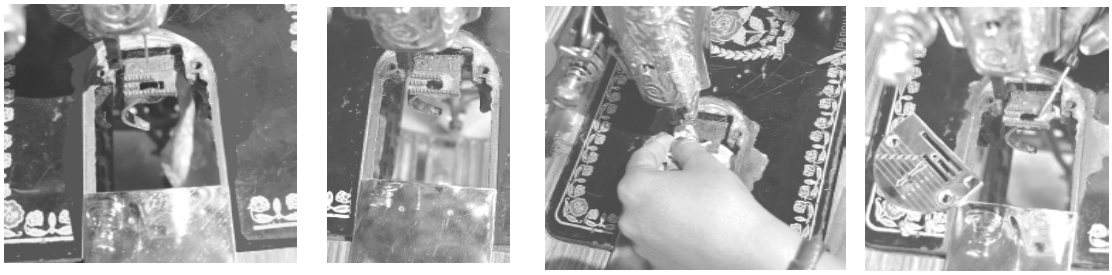

फीड डॉग (दंदराल) की सफाई करना

नोटः मषीन की सफाई करने के लिए मषीन के पुर्जों को एक साथ नहीं खोलना चाहिए क्योंकि यदि हमें मषीन के पुर्जों का ज्ञान नहीं है तो पुर्जों को सही जगह पर नहीं लगा पाएंगे।

चरण 2: सहयोगी द्वारा सिलाई मषीन में तेल देने के तरीके पर जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी पढ़ें और समझाएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को सिलाई मषीन के पास ले जाकर मषीन में तेल डालने का तरीका बताएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों को मषीन के सभी छेदों में तेल डालकर दिखाएं।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझ में नहीं आए तो फिर से समझाएं।*

सिलाई मषीन में तेल देना

सिलाई मषीन को साफ करने के बाद ही तेल देना चाहिए। तेल देने से मषीन हल्की चलती है और आवाज नहीं करती है। तेल देने से मषीन के पुर्जों में कीट (जंग) भी नहीं लगती है। इससे सिलाई का टाँका भी अच्छा आता है। मषीन में तेल देते समय नीचे लिखी बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

मषीन में अंदर–बाहर तेल देना

1. मषीन में तेल हमेषा सफाई करने के बाद देना चाहिए क्योंकि तेल मषीन का भोजन है।
2. जहां भी दो पुर्जे आपस में टकराते हैं वहीं पर पुर्जे रगड़ खाते हैं इसलिए इन जगहों पर तेल देना जरूरी है।

3. मषीन में ऊपर 11 और नीचे 15 छेद होते हैं उनमें तेल देना चाहिए। तेल देने के बाद मषीन को थोड़ी देर खाली चलाएं। कोई भी कपड़ा सिलने से पहले रफ कपड़े पर सिलना चाहिए जिससे तेल लगने से कपड़े खराब न हो जाए।

चित्र 42

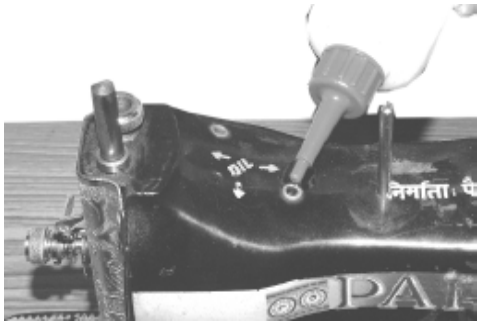

मषीन के ऊपर 11 छेद जहां तेल दिया जाना चाहिए

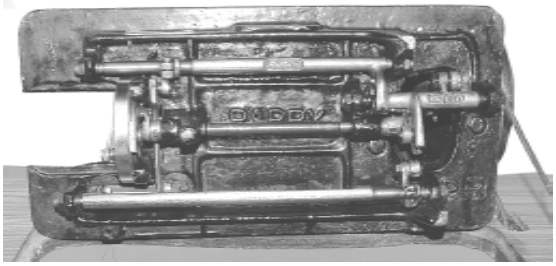

मषीन के नीचे के 15 छेद जहां तेल दिया जाना चाहिए

4. जो लोग रोज 10 से 12 घंटे काम करते हैं मषीन में रोज तेल देना चाहिए। जो लोग सप्ताह में 3–4 घंटे मषीन चलाते हैं उन्हें सप्ताह में एक बार तेल देना चाहिए। कभी–कभी काम करने वालों को महीने में एक बार तेल देना चाहिए।

5. मषीन का तेल अच्छी गुणवत्ता (क्वालिटी) वाला होना चाहिए।

6. मषीन में मिट्टी (घासलेट) का तेल, सरसों का तेल आदि नहीं डालना चाहिए। इससे पुर्जे खराब व जल्दी घिस जाते हैं। मषीन में केवल मषीन के तेल का उपयोग करना चाहिए।

चरण 3: सहयोगी द्वारा मषीन की उचित रखरखाव व देखभाल पर जानकारी

- *नीचे लिखी जानकारी पढ़ें और समझाएं।*
- *प्रषिक्षणार्थियों से जानकारी पूछें और उनके उत्तर सुनें।*
- *चरण के अंत में जानकारी का दोहराव करवाएं।*

सिलाई मषीन का उचित रखरखाव

मषीन की सफाई व उसमें तेल देने के साथ–साथ मषीन के रखरखाव की भी जानकारी होना जरूरी है।

1. ढंककर रखना

काम खतम होने के बाद मषीन को सावधानी से ढंक कर रखना चाहिए। यदि ढक्कन में ताला हो तो मषीन में ताला लगा देना चाहिए ताकि मषीन में मिट्टी न जाएं और न ही बच्चे मषीन से छेड़छाड़ कर सकें।

2. मषीन को बच्चों से दूर रखना

मषीन को बच्चों से दूर रखना चाहिए जिससे बच्चे मषीन में उंगली न डाल सकें और कोई नुकसान न हो।

3. मषीन को गीले स्थान से दूर रखना

मषीन को गीले अथवा नमी वाली जगह से दूर रखना चाहिए। मषीन को गीली जगह पर रखने से पुर्जों में जंग लग जाएगा, जिससे मषीन जल्दी खराब हो जाएगी व लकड़ी का बॉक्स होने से वह फूल जाएगा। इसलिए मषीन को गीली जगह से दूर सुरक्षित जगह पर रखना चाहिए।

4. स्टॉप (मोषन) स्क्रू ढीला करना

काम खतम होने के बाद इस स्क्रू को ढीला कर देना चाहिए। इससे मषीन को गति नहीं मिलती व बच्चों के छेड़ने से धागा नहीं फंसता तथा सुई टूटने का डर भी नहीं रहता।

5. प्रेषर फुट नीचे करना

मषीन को बंद करते समय प्रेषर फुट को हमेषा नीचे कर देना चाहिए।

6. सुई से धागा निकालना

काम खतम होने के बाद सुई से धागा निकाल देना चाहिए ताकि मषीन में धागा न फंसे।

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने सिलाई मषीन की साफ–सफाई, तेल देना और मषीन का रखरखाव के बारे में पढ़ा व समझा। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोट : प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दें। जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम सिलाई मषीन की खराबियां और ठीक करने के उपाय पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र 8: सिलाई मषीन की खराबियां और ठीक करने के उपाय

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने सिलाई मषीन की साफ–सफाई, तेल देना और मषीन का रखरखाव के बारे में पढ़ा व समझा।

इस सत्र में हम सिलाई मषीन की खराबियां और ठीक करने के उपाय पढ़ेंगे व समझेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा षुरूआती चर्चा

- *नीचे लिखी जानकारी पढ़ें और समझाएं।*
- *चरण के अंत में पढ़ाई गई जानकारी का दोहराव करवाएं।*

सिलाई मषीन की खराबियां और ठीक करने के उपाय

सिलाई मषीन चलाते समय कई बार मषीन में खराबी आ जाती है जिससे सिलाई करने में परेषानी होती है। हम इन खराबियों के कारण जानने के बाद इन्हें घर पर ही ठीक कर सकते हैं। मषीन में आने वाली खराबियां इस प्रकार हैं।

1. मषीन भारी चलना
2. धागा बार–बार टूटना
3. सुई टूटना
4. बखिया ठीक नहीं आना
5. कपड़ा इकट्ठा होना (कपड़ा आगे नहीं सरकना)
6. धागे के गुच्छे आना
7. टाँका छोड़ना

चरण 2: सहयोगी द्वारा मषीन भारी चलना, सुई टूटना और धागा बार–बार टूटने पर जानकारी

- *नीचे लिखे कारण व ठीक करने के उपाय एक–एक करके पढ़ें व समझाएं।*
- *चरण के अंत में सभी प्रषिक्षणार्थियों से पूछें कि जानकारी समझ आई या नहीं।*
- *अगर जरूरत महसूस हो तो एक बार फिर से समझाएं।*

1. मषीन भारी चलना

	कारण		ठीक करने के उपाय
1	ष्ाटल में धागा फंस गया हो।	1	ष्ाटल खोलकर उसमें फंसा धागा निकालना चाहिए।
2	मष्ाीन मे काफी समय से तेल न दिया गया हो।	2	मष्ाीन को साफ करके उसमें तेल डालना चाहिए।
3	बॉबिन वाइंडर दबा हुआ हो।	3	बॉबिन वाइंडर को उठाकर रखना चाहिए।
4	पुर्जों में जंग (कीट) लग गई हो।	4	जिन पुर्जो में जंग लगी हो तो उन पुर्जों को बदल देना चाहिए।
5	प्रेष्ार रेग्युलेटिंग स्क्रू बहुत कसा हुआ हो।	5	प्रेष्ार रेग्युलेटिंग स्क्रू को कपड़े के हिसाब से कसना चाहिए।

2. सुई टूटना

	कारण		ठीक करने के उपाय
1	सुई नीडल बार में सही तरह से फिट नहीं लगी हो।	1	सुई को नीडल बार में सही तरह से लगाना चाहिए।
2	सुई उल्टी लगी हो।	2	सुई को सीधी लगाना चाहिए।
3	सुई की नोक ठीक नहीं हो।	3	सुई की नोक खराब हो तो उसे बदल देना चाहिए।
4	धागा कपड़े के हिसाब से नहीं हो।	4	कपड़े के हिसाब से धागे का उपयोग करना चाहिए।
5	कपड़े को अधिक कलफ दिया गया हो।	5	कपड़े को धोकर उसका कलफ उतारकर सिलना चाहिए।

3. धागा बार–बार टूटना

	कारण		ठीक करने के उपाय
1	कपड़े के हिसाब से धागा नहीं हो।	1	कपड़े के हिसाब से धागा लेना चाहिए।
2	धागा ठीक से सुई में डाला नहीं गया हो।	2	धागा ठीक से डालना (पिरोना) चाहिए।
3	बॉबिन बहुत ज्यादा भरी हो।	3	बॉबिन में धागा ज्यादा नहीं भरना चाहिए।
4	सुई उल्टी लगी हो।	4	सुई का चपटा भाग अंदर होना चाहिए।
5	धागे में गठान हो।	5	धागे में गठान नहीं होनी चाहिए।

चरण 3: सहयोगी द्वारा कपड़ा इकट्ठा होना, बखिया ठीक नहीं आना, धागे के गुच्छे व टाँका छोड़ने की जानकारी

- *नीचे लिखे कारण व ठीक करने के उपाय एक–एक करके पढ़ें व समझाएं।*
- *चरण के अंत में सभी प्रषिक्षणार्थियों से पूछें कि ं समझ में आया हैं या नहीं।*
- *अगर जरूरत महसूस हो तो एक बार फिर से समझाएं।*

4. कपड़ा इकट्ठा होना

	कारण		ठीक करने के उपाय
1	ऊपर और नीचे के धागे की मोटाई एक जैसी नहीं हो।	1	ऊपर और नीचे का धागा एक समान होना चाहिए।
2	नीचे और ऊपर का धागा बहुत कसा हुआ हो।	2	नीचे और ऊपर के धागे का कसाव बराबर होना चाहिए।
3	बॉबिन केस (डिब्बी) की पत्ती घिस गई हो।	3	अगर बॉबिन केस की पत्ती घिस गई हो तो उसे बदल देना चाहिए।
4	सुई की नोक घिस गई हो।	4	सुई की नोक घिस गई हो, तो उसे बदल देना चाहिए।
5	सुई ऊंची या नीची लगाई गई हो।	5	सुई को सही जगह पर लगाना चाहिए।

5. बखिया ठीक नहीं आना

	कारण		ठीक करने के उपाय
1	सुई मषीन में ठीक तरह से नहीं लगी हो।	1	सुई को मषीन में सही तरीके से लगाना चाहिए।
2	सुई खराब हो।	2	अच्छी सुई लगाना चाहिए।
3	प्रेषर फुट का पेंच ढीला हो।	3	प्रेषर फुट का पेंच अच्छी तरह से कसा होना चाहिए।
4	धागे को खींचकर तोड़ा गया हो।	4	धागे को कैंची से ही काटना चाहिए।
5	कपड़ा मोटा और सुई पतली हो।	5	मोटे कपड़े के लिए मोटी सुई काम में लेना चाहिए।
6	बॉबिन केस मषीन में ठीक तरह से नहीं लगा हो।	6	बॉबिन केस को मषीन में ठीक तरह से लगाना चाहिए।
7	सुई कपड़े के हिसाब से नहीं हो।	7	सुई कपड़े के हिसाब से होना चाहिए।
8	कपड़ा श्रिंक न किया गया हो।	8	कपड़े को श्रिंक करके सिलना चाहिए।
9	सुई मुड़ी हुई हो या टेढ़ी हो।	9	सुई बदल कर लगाना चाहिए।
10	सुई की नोक घिस गई हो।	10	सुई को बदल देना चाहिए।

6. **धागे के गुच्छे आना**

	कारण		ठीक करने के उपाय
1	फीड डॉग ठीक से नहीं लगा हो।	1	फीड डॉग अच्छी तरह से सिलाई मष्ीन में लगाना चाहिए।
2	सुई की नोक ठीक नहीं हो।	2	सुई की नोक घिस गई हो तो सुई बदल देना चाहिए।
3	कपड़ा पतला और धागा मोटा हो।	3	पतले कपड़े के नीचे और ऊपर कागज रखकर सिलाई करना चाहिए।
4	प्रेष्ार फुट चिकना नहीं हो।	4	प्रेष्ार फुट अगर खराब हो तो बदल देना चाहिए।
5	धागे का कसाव बराबर नहीं हो।	5	धागे का कसाव एक समान होना चाहिए।

7. **टाँका छोड़ना**

	कारण		ठीक करने के उपाय
1	बॉबिन में धागा ढीला भरा गया हो।	1	बॉबिन में धागा ठीक से भरना चाहिए।
2	ऊपर और नीचे के धागे का कसाव बराबर नहीं हो।	2	ऊपर और नीचे के धागे का कसाव एक समान होना चाहिए।
3	बॉबिन केस में कचरा फंस गया हो।	3	बॉबिन केस में कचरा फंसा हो तो उसे खोलकर साफ करना चाहिए।
4	फीड डॉग में कचरा हो।	4	फीड डॉग को खोलकर उसे साफ करना चाहिए।
5	धागा ठीक से नहीं डाला गया हो।	5	मष्ीन में धागा अच्छी तरह से डालना चाहिए।

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने सिलाई मषीन की खराबियां और ठीक करने के उपाय पढ़ा व समझा। इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोट : प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दें। जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में हम पाठ के सभी सत्रों का दोहराव करेंगे।

सत्र 9: पाठ का दोहराव

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

पिछले सत्र में हमने सिलाई मषीन की खराबियां और ठीक करने के उपाय पढ़े व समझे।

इस सत्र में हम पाठ के सभी सत्रों का दोहराव करेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा पाठ का दोहराव

- *संक्षेप में पाठ के सभी सत्रों का दोहराव करवाएं।*
- *यह जानने की कोषिष करें कि प्रषिक्षणार्थियों को सारी जानकारी याद है या नहीं।*
- *जरूरत पड़ने पर प्रषिक्षिका की मदद लें।*

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

इस सत्र में हमने पाठ के पिछले सभी सत्रों का दोहराव किया। अब आपको इस पाठ से जुड़ी सभी जानकारियां याद हो गई होगी। आप ये जानकारी दूसरों को भी दें। अगर इस सत्र से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोट : प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दें, जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र में पाठ की मौखिक परीक्षा होगी।

सत्र 10: मौखिक परीक्षा

प्रषिक्षिका द्वारा परिचय

अब आपको इस पाठ की पूरी जानकारी याद हो गई होगी। इन सब जानकारियों का एक बार फिर से दोहराव करने के लिए और यह जानने के लिए कि आपको यह जानकारी याद हैं या नहीं, आपकी मौखिक परीक्षा ली जाएगी। इस परीक्षा के प्रष्न इस तरह से बनाएं गए हैं कि पाठ के सभी महत्वपूर्ण भागों को षामिल किया जा सके। आप पूछे गए सभी प्रष्नों के उत्तर दें।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा मौखिक परीक्षा

- *हर प्रषिक्षणार्थी को समूह से थोड़ा दूर ले जाएं फिर उनसे एक–एक करके नीचे लिखे प्रष्नों का उत्तर बोलकर बताने को कहें।*
- *उन्हें हर प्रष्न का उत्तर सोचने के लिए एक मिनिट का समय दें।*
- *परीक्षा लेने के लिए आप सहायता करने योग्य प्रषिक्षणार्थियों की मदद ले सकती हैं।*
- *जब आप किसी प्रषिक्षणार्थी से प्रष्न पूछ रही हों, तो इस दौरान समूह की अन्य प्रषिक्षणार्थियों से पाठ का दोहराव करने को कहें।*
- *यह परीक्षा कुल 30 अंक की है।*
- *हर प्रष्न के आगे अंक दिए गए हैं। प्रषिक्षणार्थियों को प्रषिक्षण पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी के अनुसार अंक दें। अगर वे प्रष्न का पूरा उत्तर बताएं तो पूरे अंक दें और अगर वे अधूरा उत्तर बताएं तो उनके द्वारा बताए गए उत्तर के अनुसार अंक दें।*

नोट : परीक्षा के अंत में अपने समूह की प्रषिक्षणार्थियों को मिले अंक पन्ने पर लिखकर प्रषिक्षिका को दें।

क्र.	प्रष्न	अंक
1	सिलाई मशीनों के नाम बताएं और दो सिलाई मशीनों का उपयोग बताएं?	5
2	सिलाई मशीन के 10 पुर्जो के नाम बताएं। उन्ही में से 5 का उपयोग बताएं?	5
3	सिलाई मशीन पर काम करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?	4
4	सिलाई मशीन को सुचारू रूप से चलाने के लिए उसका रख–रखाव कैसे करना चाहिए?	4
5	सिलाई मशीन में तेल देना क्यों जरूरी है? तेल देने के तरीके बताएं?	3
6	सिलाई मशीन में आने वाले निम्नलिखित दोषों व उन्हें ठीक करने के उपाय बताएं?	4
7	सही/गलत बताएं	5
	1. फ्लाई व्हील को कसने से धागा फिरकी (बॉबिन) में भरता है ?	सही/गलत
	2. सुई में धागा क्रम से डालना चाहिए?	सही/गलत
	3. सुई की चपटी साइड बाहर की ओर होना चाहिए?	सही/गलत
	4. सिलाई खत्म करने के बाद दो इंच (5 से.मी.) धागा छोड़ना चाहिए?	सही/गलत
	5. डिब्बी (बॉबिन केस) को शटल में लगाने पर कोई आवाज नहीं आती है?	सही/गलत

प्रषिक्षिका के लिए नोट : प्रषिक्षणार्थियों को मिले अंक देखने के बाद अगर जरूरत हो तो आप पाठ का दोहराव करवा सकती हैं या दोबारा परीक्षा ले सकती हैं।

प्रषिक्षिका द्वारा पाठ का समापन

इस पाठ में हमने अलग–अलग तरह की सिलाई मषीनों के नाम व उनके उपयोग के बारे में पढ़ा तथा सिलाई मषीन पर काम करते समय ध्यान रखने वाली बातें और मषीन का सही रखरखाव व देखभाल की जानकारी पढ़ी और समझी। अगर इस पाठ से जुड़े आपके प्रष्न हैं तो पूछें।

नोट : प्रषिक्षणार्थियों के सभी प्रष्नों का उत्तर दें। जब सभी प्रषिक्षणार्थी संतुष्ट हो जाएं तो कहें,

अगले सत्र मे हम नया पाठ पढ़ेंगे जिसमें हम सिलाई में काम आने वाले औजारों के बारे में पढ़ेंगे।

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षित कर उनकी क्षमताओं, योग्यताओं और ज्ञान को उजागर करता है और उन्हें 'सामाजिक परिवर्तन कार्यकर्ता' के रूप में विकसित कर सक्षम बनाता है। जिससे वे अपने, अपने परिवार, समुदाय, गांव और देश का विकास कर सकें और उनके आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में आगे बढ़ सकें। उनके अधिकारों की पहचान सकें और उनमें अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास और बीमारियां कम हो सकें।

ग्रामीण और आदिवासी इलाकों से आने वाली इन महिलाओं के लिए 'बरली' एक जाना पहचाना नाम है। बरली का अर्थ है घर का वो मजबूत स्तम्भ जिसके बल पर पूरा घर टिका रहता है। 'बरली' शब्द संस्थान के विश्वास को संबोधित करता है, जो मानता है कि महिलाएं समाज का आधार स्तम्भ हैं। इंदौर में स्थित इस संस्थान में अब तक मध्यप्रदेश तथा भारत के अन्य प्रांतों के 450 गांवों की 4000 महिलाओं को निःशुल्क आवासीय प्रशिक्षण दिया जा चुका है। छत्तीसगढ़ राज्य में संस्थान के तीन विस्तार केन्द्र हैं जिन्हें यहीं से प्रशिक्षित स्थानीय प्रशिक्षिकाएं चला रही हैं। संस्थान में प्रवेश लेने के लिए सामाजिक और आर्थिक रूप से जरूरतमंद जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, विकलांग, अकेली, विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्ता एवं पीड़ित को प्राथमिकता दी जाती है।

कटाई-सिलाई प्रशिक्षण व्यावसायिक कौशल विकास हेतु दिया जाता है। इस प्रशिक्षण से वे अपनी पारंपरिक कला और शिल्प सीखकर उनमें आय वृद्धि का सक्षम बनाती हैं। इस कला का उपयोग करके वह अपने-अपने समुदाय के जीवन को बेहतर बनाती हैं। कटाई-सिलाई प्रशिक्षण के तीन भाग हैं:- सैद्धांतिक, प्रायोगिक व परीक्षा की तैयारी। प्रशिक्षण के अंत में वे प्रशिक्षणार्थी नई दिल्ली की नेशनल इंस्टीट्यूट ओपन स्कूलिंग की कटाई-सिलाई की व्यावसायिक परीक्षा देती हैं। यह पुस्तक संस्थान के 25 वर्षों के विस्तार अध्ययन प्रणाली व अनुभव के आधार पर लिखी गई है।

राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभा, नई दिल्ली ने सन् 1985 में बरली ग्रामीण महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान के नाम से इसकी स्थापना की थी। सन् 2001 में ये मध्यप्रदेश [illegible] अधिनियम के तहत स्वायत्त [illegible] संस्था बन गई। जिसका संचालन बहाई निदेशक मंडल करती है। यह संस्थान बहाई शिक्षाओं से प्रेरित है।

भारत के विभिन्न भागों से महिलाएं अपने विकास के लिए छः महीने तक एक साथ इस संस्थान में परिवार की तरह रहती हैं। संस्थान परिसर में प्रशिक्षणार्थियों को साफ सुथरा, स्वच्छ प्राकृतिक वातावरण मिलता है। यहां छोटी-छोटी पहाड़ियां, फल और फूलों से लदे हुए पेड़, कई तरह के पक्षी और तितलियों के बीच सीखने-सिखाने का एक सुखमय और सुरक्षित माहौल मिलता है। 8 एकड़ जमीन पर बने हुए संस्थान परिसर में प्रशिक्षण के लिए आवश्यक सभी मशीनें, उपकरण, मूलभूत सुविधाएं, भवन, सीखने-सिखाने के लिए कक्ष, कम्प्यूटर प्रयोगशाला, पुस्तकालय, रहने के लिए कमरे, प्रशिक्षणार्थियों, स्टाफ तथा स्वयंसेविकाओं के लिए आवास और स्वास्थ्य सेवाओं से लेस सुविधाएं उपलब्ध होती हैं।